समझदार लुड्डू

बाल कहानियाँ

डॉ. चेतना उपाध्याय

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

समझदार लड्डू

बाल कहानियाँ

डॉ. चेतना उपाध्याय

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - "978-93-5372-064-3"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक-प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **डॉ. चेतना उपाध्याय**

मूल्य - १५०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

SAMAJHDAR LADDU BY DR.CHETNA UPADHYAY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रिय बच्चों

असीम स्नेहाशीष

मुझे पता है कि पाठ्यक्रम में शामिल पुस्तकें पढना तुम्हारे लिए मजबूरी बन गया है, क्योंकि वह बेहद जरूरी है। उन्हें पढकर याद रखना तुम्हारे तनाव का कारण बन जाता है।

तुम पढ़ना चाहते हो ऐसी पुस्तकें जिसमें तुम्हारे मन की बात हो, आस पास की घटनाओं का जिक्र हो। जिसे पढने में तुम्हें मजा आए। और सबसे बड़ी बात यह कि जिसे याद रखना, रटना की भी जरूरत नहीं हो। बस तुम अपनी इच्छानुसार पढ़ो जब मरजी हो तबतक पढ़ो। जब इच्छा नहीं हो तो छोड़ दो, कोई रोकने, टोकने वाला नहीं हो, तब मजा आता है पढने का।

बस यही मजे से, पढ़ने के लिए यह कहानी संकलन तुम्हें सौंप रही हूँ। विश्वास है तुम्हें अवश्य ही पसंद आएगा। इसमें जो कहानियाँ हैं, वे तुम्हारे ही मन की अनुभूतिया है। कभी अपनी तो कभी किसी दोस्त की छवि, दिखाई देगी। जिसका तुम भरपूर आनंद उठाना।

ढेर सारे प्यार के साथ
तुम्हारी ही **चेतना**

बहुआयामी रोचक कथाएँ

बच्चों के लिए कुछ भी लिखना यानि बाल साहित्य, आमतौर पर यही धारणा दिखती है। मुझे लगता है कि बाल मनोविज्ञान को भलीभाँति समझते हुए और समय, काल के अनुसार परिवर्तित होती परिस्थितियो को ध्यान में रखकर बच्चों की रूचिकर विधा में सर्जन बाल साहित्य कहा जाना चाहिए। बच्चों को बच्चा समझकर लिखना तो अपनी ऊर्जा को जाया करना मात्र ही है। खलिल जिब्रान ने भी कहा है- ''तुम उन्हें अपना प्यार दे सकते हो, लेकिन विचार नहीं क्योंकि उनके पास अपने विचार होते हैं। तुम उनका शरीर बन्द कर सकते हो, लेकिन उनकी आत्मा नहीं, क्योंकि उनकी आत्मा आने वाले कल में निवास करती है, उसे तुम नहीं देख सकते हो, सपनों में भी नहीं देख सकते हो। तुम उनकी तरह बनने का प्रयत्न कर सकते हो लेकिन उन्हें अपने जैसा बनाने की इच्छा मत रखना क्योंकि जीवन पीछे की ओर नहीं जाता और न ही बीते हुए कल के साथ रूकता है।''

इससे स्पष्ट है कि बाल साहित्य लिखना अत्यंत सरल नहीं, दुरूह कार्य है और इसके लिए गंभीर चिन्तन

की आवश्यकता है। आज के बच्चे क्या सोचते हैं, क्या करना चाहते हैं, परिवेश उनको कैसा वातावरण दे रहा है, इन सब पर गहन दृष्टि रखने की आवश्यकता है। तकनीकी के इस युग में हम अनेक बातें बच्चों से ही सीख रहे हैं, तब बच्चों को केवल सीख देने के लिए बाल साहित्य लिखने की धारणा को बदलना होगा। मुझे लगता है कि बाल साहित्य बाल सुलभ होना चाहिए, अर्थात रचनाऐं, बच्चों को आनन्द देने वाली होनी चाहिए और यही लेखक की प्राथमिकता भी होनी चाहिए। बच्चों को उनकी रूचि के अनुरूप रचनाऐं ही उनमें पढ़ने की उत्कंठा जगा सकती है। बाल साहित्य की परंपरा को देखे तो भी समझ आता है कि पचतंत्र की कहानियाँ, जातक कथाऐं, तेनालीराम, अकबर-बीरबल के किस्से क्यूँ लोकप्रिय हुये, टॉम एण्ड जैरी, मिकि माउस जैसे कार्टून और हैरी पॉटर जैसे उपन्यास क्यों वर्षों तक बच्चों के चहेते बने रहे हैं। हाँ हम बाल रचनाओं में उन्हें ऐतिहासिक घटनाओं, महापुरूषों के जीवन प्रसंगों इत्यादि के माध्यम से संस्कृति, संस्कार और तात्कालिक चुनौतियों व संघर्षों की जानकारी दे सकते हैं और वर्तमान समय की विषमताओं के प्रति सचेत भी कर सकते हैं, ये करना भी चाहिए, ताकि बच्चे उन अनुभवों

से अपना जीवन सफल, सार्थक व श्रेष्ठ बनाने का मार्ग खोज सकें।

कुछ ऐसी ही बाल सुलभ कहानियों से सजा है शिक्षाविद् और बाल साहित्यकारा डॉ. चेतना उपाध्याय का यह बाल कथा संकलन 'समझदार लड्डू', संग्रह में दस बाल कहानियाँ हैं और सभी बड़ी सरस कहानियाँ हैं। बालमन की अनुभूतियों को सहजता से अभिव्यक्त करती रोचक कहानियाँ हैं, इस संकलन में वैसे तो वर्तमान अत्याधुनिक समय के बच्चे भी कुछ विशेष बुद्धि लिये हुए हैं, इसी कारण वे इस युग के तकनीकी उपकरणों व स्थितियों को सरलता से समझ लेते हैं और बड़े- बुजुर्गों को समझा भी देते हैं। वैसे हमारे समय का एक लोकमत भी है कि मजबूरी बच्चों को समय से पहले परिपक्व व समझदार बना देती है। यही बात संग्रह की शीर्षक कहानी **समझदार लड्डू** में भी दर्शायी गयी है। गरीबी में जीवनयापन कर रहा बालक लड्डू निरन्तर नये व अच्छे खिलौनों से खेलने की चाह में हर खेल में हार स्वीकार करते हुए, समझदारी का परिचय देता है। इसी होशीयारी से उसे नये खिलौनों से खेलने का अवसर मिलता भी है। **"लीना का गणित"** कहानी में लीना अपनी सुविधाओं का

गणित स्वयं ही बैठा लेती है और अपने लिए श्रेष्ठ मार्ग चुन लेती है। कहानी में उत्सव के मनोरंजक दृश्य हैं, जो बच्चों को लुभाते हैं। यहाँ पारिवारिक समारोह में बच्चे के लिए उपस्थित समस्याओं को भी रोचकता से उठाया गया है। बच्चे स्वयं ही उलझते भी हैं और फिर समझ से सुलझते भी जाते हैं।

दोस्ती के तराने, संगत का असर, मिट्टी की ताकत और गुदगुदाते हुए कहानियाँ सामाजिक परिदृश्य को उकेरती दिखती हैं। अधिकांश कहानियों में बाल पात्रों का होना उन्हें पठनीय और बच्चों के लिए रूचिकर बनाता है। **उम्मीद के पार, तोड़ना-खेलना** कहानियों के कथानक कुछ अलग किन्तु रोचकता लिए हुए हैं। **तोड़ना या खोलना** भी बहुत ही अनूठी और जिज्ञासावर्द्धक कहानी है। इसमें बाल सुलभ रचनात्मकता को उकेरते हुए उसके सकारात्मक पहलू को दिखाया गया है। सभी कहानियों में वर्तमान समय की बच्चों की दुनियाँ दिखायी पड़ती है, इनमें प्रदर्शित घटनाऐं अपने आस-पास की सी ही महसूस होती है। अधिकांश प्रसंग आनन्द और खेल-खेल में बच्चों को बड़ो की दुनिया, उनकी सोच और स्थितियों से भी जोड़ जाते हैं।

कहीं-कहीं बड़ो को भी बच्चों के साथ कैसा व्यवहार हो यह संदेश प्रगट होता है।

कहानियों की भाषा परिवारों में प्रयुक्त आम भाषा है, इसलिए सहज ग्राह्य है। यूँ भी बाल सहित्य में क्लिष्ट शब्दावली से बचना ही चाहिऐ, हाँ मुहावरों का प्रयोग निश्चित रूप से कथा को प्रभावी बनाता हैं। कहानियों के अनुकूल सुन्दर चित्र भी बाल पाठकों की रूचि और जिज्ञासा को बढ़ाने वाले हैं। लेखिका स्वयं शिक्षिका हैं, इसलिए कहानी के माध्यम से कहीं न कहीं बच्चों को कुछ सिखा देने की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक भी है और वह लेखन में दिखती भी है। उम्मीद करता हूँ कि यह कथा संग्रह बच्चों को पसन्द आएगा।

उमेश कुमार चौरसिया
रंगकर्मी एवं साहित्यकार

विद्यालयों में ऐसी पुस्तक होनी चाहिए...!

प्रकाशक अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन वारासिवनी, बालाघाट। (म.प्र.) वैश्वीकरण के इस तकनीकी युग में बालकों के मनोरंजन हेतु तकनीकी संसाधनों की प्रचुर भरमार है। अतः स्वाभाविक रूप में बालक पुस्तकीय संसार से दूर होता दिखाई दे रहा है। ऐसे समय पर पुस्तक 'बालकों की अदालत' का आना बड़ी ही खुशी की बात है। इसका खूबसूरत, मनमोहक मुख्य पृष्ठ बच्चों को आकर्शित करने की क्षमता रखता है। भीतरी रचना संसार भी बालमन से उपजा ही महसूस होता है।

प्रत्येक रचना बालकों द्वारा ही रचित लगती है। क्योंकि लेखक से इसमें बाल अनुभूतियों को बड़ी ही बेबाकी व मासूमियत से उकेरा है। मैं अपने पाठकीय दृष्टिकोण से कह सकता हूँ कि पुस्तक बालमन को परोसने में खरी उतरी है।

प्रत्येक रचना कहीं माँ तो कहीं पिता को कहीं दादी-नानी को तो कहीं समाज को कटघरे में खड़ा करती ही प्रतीत होती है, जो कि पुस्तक के शीर्षक को भी सार्थकता प्रदान करता है। शब्द चयन भी सरल, सहज व सुन्दर है जिसके परिणाम स्वरूप रचनाऐं भी रूचिकर हो गई है।

पुस्तक की पहली रचना **'सुनहरी सुबह'** तो प्रत्येक बच्चे के दिल का राज खोलती महसूस होती है। बालक इसे पढ़ते ही खुद को पुस्तक से जुड़ा हुआ पायेगा, जिससे वह स्वयं आत्मप्रेरित हो आगे पढ़ना जारी रख सकेगा। आगे की रचनाओं में सेहत का खजाना, लाल टमाटर, अटर-बटर, मैगी जी की बारात बेहत खूबसूरती से उकेरी गई है। जिन्हें पढ़ते-पढ़ते दैनिक जीवन से जुड़े दृश्य स्वतः ही आँखों के आगे तैरने लगते हैं।

एक रचना है ऐरोप्लेन जरा बानगी देखिए -

पापा ऐरोप्लेन दिला दो
आकाश घूम कर आऊँगा,
सूरज चाचू से बात करूँगा।
थोड़ा डांट कर आऊँगा।।

बाल सुलभ चपलता कितनी सहजता से पेश की गई है। यही वो विशेषता है जो इस संकलन की ताकत है। यह पुस्तक बालकों को बहुत अच्छी लगेगी, क्योंकि इसका कलेवर ही कुछ इस तरह का दिया गया लगता है, यहाँ कोरा ज्ञान कहीं भी परोसा नहीं गया है। यह बालकों के साथ बड़ों हेतु भी पठनीय है क्योंकि इसकी रचनाऐं रोचक स्वरूप में बाल मनोविज्ञान से ओत-प्रोत होने से स्पष्ट रूप में बाल अपेक्षाऐं बड़ों के सामने रखने का साहस जुटाती है। रचनाओं में दूरदर्शन के बाजारू

विज्ञापनों का बालकों पर प्रभाव भी, इसमें स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यह एक विचारणीय मुद्दा है, जो हमें समझना होगा कि ये बाजारू विज्ञापन हमारे मानवीय मूल्यों, मनोभावों को कितनी गहराई से प्रभावित कर रहे हैं कि हमारे पारीवारिक रिश्ते भी इसकी चपेट में आकर अपने अस्तित्व पर प्रहार झेल रहे हैं। आम जीवन में विज्ञापन वाले **आभासी रिश्तों का** नकारात्मक प्रभाव भी रचनाओं के माध्यम से स्पष्ट हो रहा है।

पुस्तक में यथोचित रेखाचित्रों का समावेश किया गया है, फिर भी यहाँ थोड़ी सी कमी अखरती है कि काश ये चित्र रंगीन और बड़े आकार में होते तो इस पुस्तक में और निखार आ जाता। मौज, चंदा मामा, नन्हीं गुड़िया, पिज्जा, पापा आपका साथ सभी विविधता से भरी रचनाऐं हैं, जो बाल सुलभ सहजता के साथ मनोरंजक संसार से भी परिचित करवाती है और सशक्तता से अपनी बात बड़ों के सम्मुख रख भी जाती है।

पापा आपका साथ चाहिऐ,
छूने को आकाश चाहिऐ,
मैं तिल तिल बढ़ पाऊँगी,
मेहनत संग स्नेह संबल चाहिऐ।

बाल सुलभ आकांक्षा इतनी सहजता से पेश की गई है कि हमारे चेहरे पर स्नेहिल मुस्कान आ ही जाती है। देखिए अगली रचना में दादी को घेरा है...

दादी अब हो जाओ मौन,
बोलता है डोरेमोन,
सरपट दौड़ो या फिर भागो,
देखो अब आ गया है पोगो।

इस रचना में इतनी सरलता से दादी पोते का संवाद दर्शाया गया है कि लगता है, हर घर की यही कहानी है। आशाओं, अपेक्षाओं से जुड़ी हर बच्चे की बानी है। इस संकलन में एक रचना है 'परांठा' जो अन्य रचनाओं से थोड़ी बड़ी है। मगर सरलता व समझदारी से इसका ताना बाना बुना गया है कि

तरन्नुम मे गाते-गाते बच्चे,
तो बच्चे बड़े भी झूमने को विवश हो जाऐं,
यम-यम, यम्मी आलू परांठा,
कितना टेस्टी आलू परांठा।
भोर उठे तो पेट साफ है,
कल के सारे गुनाह माफ है।
यह यम-यम्मी आलू पराठा...!

कुल मिलाकर यह पुस्तक बालकों को पुस्तकों से जोड़ने की ताकत रखती है। विद्यालयों में ऐसी पुस्तक होनी चाहिए, जिसे बालक स्वयं पढ़ने को उत्सुक हो। उनमें पुस्तक पढ़ने की आदत विकसित हो। यह पुस्तक सहज, सरल, रोचक संसार उपलब्ध कराती है बालकों को। जिसमें प्रत्येक रचना में बाल सुलभ अपेक्षा

व विविधता के दर्शन होते हैं। यह बालकों के लिए लिखी जाने वाली पुस्तकों से अलग है, जो कि स्वयं बालमन द्वारा लिखी गई प्रतीत होती है। इस हेतु लेखिका को हार्दिक साधुवाद, हार्दिक अभिनन्दन।

समीक्षक- बृह्म प्रकाश गौड़
म.नं. ६, हिल एरिया, कृष्णा मार्ग,
कुन्दन नगर, अजमेर।

अनुक्रमणिका

1.	संगत का असर	15-21
2.	तोड़ना या खोलना	22-32
3.	एक पाती पुत्र के नाम	33-39
4.	दिमाग का खेल	40-47
5.	सफाई हम क्यों करें	48-53
6.	मिट्टी की ताकत	54-60
7.	लीना का गणित	61-70
8.	समझदार लड्डू	71-75
9.	उम्मीद के पार	76-84
10.	दोस्ती के तराने	85-89
11.	चोट का लाभ	90-96

संगत का असर

वरूण के पापा का ट्रांसफर हरियाणा राजस्थान के बोर्डर पर बड़गाँव में हो गया, तो वरूण और उसकी मम्मी भी साथ में यहीं आ गए। गाँव में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली और घर के पास ही आम, जामुन, अमरूद, अनार के फलों से लदे हुए वृक्ष। जब भी इच्छा हो, ताजा फल पेड़ से तोड़ो और खा लो... मजा आ जाता है।

शहर में इतने स्वादिष्ट फल वरूण को नहीं मिल पाए थे, इसलिये भी उसे यह गाँव अच्छा लगा था। स्कूल

भी घर के पास ही था, तो उसे शहर वाले स्कूल की तरह जाने के लिये वैन का भी इंतजार नहीं करना पड़ता था। पैदल ही दो मिनट में स्कूल आ जाता। वहाँ सूरज, दीपक, अमित से उसकी अच्छी दोस्ती भी हो गई थी। वह सभी से, अच्छे से घुलमिल गया। जल्द ही उसका मन बड़गाँव में लग गया। उसकी मम्मी अभी किसी से मेल-जोल बढ़ा नहीं पाई थी, फिर शहरी सुख-सुविधाऐं भी यहाँ उपलब्ध नहीं तो उनका मन जरा उखड़ा-उखड़ा सा ही रहता था। वैसे टी.वी. तो उनका सबसे अच्छा साधन था ही, उन्हें यहाँ टी.वी. देखने का भरपूर समय मिल जाता। यहाँ सूर्योदय के साथ ही दिन की शुरूआत होती और सूर्यास्त के साथ ही दिन ढल जाता, सब अपने-अपने घरों में चले जाते। शहर में तो आठ बजे बाद दिन की शुरूआत होती थी और रात लगभग ग्यारह बजे तक चारों तरफ चहल-पहल बनी रहती थी।

एक दिन दीपक ने पूछा, वरूण तुम सवेरे दौड़ने क्यों नहीं आते हो? दौड़ने? कहाँ? वरूण ने आश्चर्य से पूछा। यही गाँव की पगडंडियों पर, सवेरे बड़ा मजा आता है, तुम आया करो दीपक बोला। दीपक वरूण का खास दोस्त बन गया था, तो इसकी बात वह कैसे टालता ठीक

है मैं भी आऊँगा। मगर सवेरे-सवेरे तो स्कूल जाना होता है, न वरूण बोला। अरे लड़के पाँच बजे दौड़ने निकलते हैं। स्कूल तो ६ बजे का है। पर मैं तो आठ बजे सोकर उठता हूँ...

तो कोई बात नहीं मैं कल जल्दी आकर तुम्हारे दरवाजे की कुण्डी जोर-जोर खटखटाकर तुम्हें जगा दूँगा फिर अपन साथ चलेंगे दौड़ने। पर ब्रश, दूध, स्नान... अरे वह सब आकर कर लेना। वरूण की बात खत्म होने से पहले ही दीपक बोल पड़ा। चल ठीक है चलते हैं यदि तू मुझे जगा देगा तो मैं अवश्य ही चलूँगा, मुझे तुम्हारे साथ रहना अच्छा लगता है।

अगले दिन पौनें पाँच बजे ही दीपक ने आकर वरूण को जगा दिया। आँखे मलते हुए वरूण उठा, बाहर आया, दीपक ने कहा चल आजा... वरूण की मम्मी बोली पहले फ्रैश होकर ड्रैस चैंज करके जाना। किन्तु दीपक वरूण उनकी बात को अनसुना कर दौड़ गए।

कच्ची पक्की पगडंडियों पर यों दौड़ना, वह भी इतना सवेरे... वरूण का पहला अनुभव था। पर वहाँ चारों तरफ जहाँ तक भी नजर जाती बहुत सारे बच्चे दौड़ते हुए ही नजर आते। पंक्षियों की चहचहाहट से

निराला सा संगीत महसूस हो रहा था। ताजी हवा भी खुशनुमा एहसास करवा रही थी। सभी बच्चे अपनी धुन में दोड़े जा रहे थे। ऐसा दृश्य भी शहर में कभी देखा नहीं था वरूण ने, इसलिये पूछ बैठा... यहाँ तो सभी दौड़ रहे हैं, पर ऐसे क्यों दौड़ रहे हैं?

दौड़ने से सेहत अच्छी रहती है और आगे चल कर सैनिक बनने में सहूलियत हो जाती है। दीपक ने अपना ज्ञान परोसा। सैनिक क्यों बनना? वरूण जिज्ञासावश पूछ बैठा। अरे हमारे गाँव में ऐसा एक भी घर नहीं जहाँ सैनिक न हो, यह हमारे गाँव की शान है, मेरी दादी कहती है, पढ़ना-लिखना तो तुम्हारी मर्जी, मगर सैनिक बनना गाँव की परम्परा है। इसे निभाना जरूरी है वरना गाँव में नाक कट जाती है। देश भक्ति का जज्बा कूट-कूट कर भरा हुआ है हमारे गाँव में। दीपक ने सीना फुलाते हुए कहा। दौड़ते-दौड़ते वरूण की सांस फूल गई थी तो बोला थोड़ा सुसतालें अब...

अरे थोड़ी दूर और... बस मेरे पापा की चबूतरी आने वाली है। वहीं थोड़ा सुसताऐंगे और पापाजी का आशीष भी लेंगे। ऐसा कहते हुए उसने अपनी दौड़ की

गति और बढ़ा दी, वरूण को भी उसके पीछे दौड़ना ही था।

थोड़ी दूरी पर ही एक मूर्ति के पास दीपक रूका, फिर उसने साष्टांग प्रणाम किया और वहीं चबूतरे पर बैठ गया। उसे बैठते देख वरूण की भी जान में जान आई। वह थक कर चूर हो गया था। इसकी सासें उखड़ सी रही थी, तो वह वहीं लेट गया। लेटे-लेटे ही वह दीपक को देख रहा था। दीपक पास की तीन मूर्तियों के पास जाकर साष्टांग प्रणाम कर लौट आया था। आते ही बोला... चल उठ कुम्भकरण की औलाद।

दीपक की शर्ट पर मिट्टी लग गई थी। वरूण उसे झाड़ते हुए बोला, मम्मी डाटेगी तुझे। हर जगह मिट्टी में उल्टा लेट जाता है पागल सा,...

शहरी बाबू धीरे-धीरे तू भी सब समझ जाएगा, दीपक हँसते हुए बोला! फिर उसने सामने वाली मूर्ति की ओर इशारा करते हुए बताया वो मेरे दादाजी है। पाँच साल पहले शहीद हो गये थे। दायीं तरफ ताऊजी है और ये मेरे पापा की मूर्ति है। ये दोनों एक साथ दो वर्ष पहले शहीद हुए थे। मैं यहाँ इनसे आशीष लेने रोज आता हूँ,

ताकि मैं भी इस मातृभूमि के काम आ सकूँ मुझे भी बड़ा होकर सैनिक बनना है। तुम्हारे घर में कितने सैनिक है?

हमारे यहाँ तो एक भी नहीं। अच्छा? ठीक है कोई बात नहीं, मैं यह बात किसी को भी नहीं बताऊँगा। अब तू भी बड़ा होकर सैनिक बनना। अपन दोनों मिलकर धरती माँ की सेवा करेंगे। माँ को खूब सारा पैसा भेजेंगे। कभी शहीद हो गए तो यहाँ अपनी भी मूर्ति लगेगी, चबूतरी बनेगी। पूरा गाँव अपनी और अपनी माँ की इज्जत करेगा। बोल बनेगा सैनिक? वरूण को ठीक से कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसे तो बस दीपक का साथ अच्छा लगता है, इसलिये उसने भी हाँ में हाँ मिला दी और दोनों सरपट दौड़ पड़े अपने घर की ओर।

रास्ते में दौड़ते-दौड़ते दीपक शहीदों की शहादत के किस्से सुनाता रहा, उसका हर शहीद स्मारक पर रूकना जिसे वो चबूतरी बोलता है, साष्टांग प्रणाम करना और आगे बढ़ जाना। वरूण को भी अच्छा लग रहा था। घर पहुँचते-पहुँचते एक नया पाठ पढ़ा था वरूण ने, जो कि किसी पुस्तक में नहीं था। उसे यों दौड़ना अच्छा लगने लगा। घर पहुँचते ही माँ ने घबराते हुए पूछा क्या हो गया था? कहाँ गए थे तुम?

अरे कुछ नहीं मम्मा हम यों ही पगडण्डी पर दौड़ रहे थे। खूब मजा आया। यहाँ सभी बच्चे सवेरे-सवेरे ऐसे ही दौड़ते हैं, बड़े होकर सैनिक बनने के लिये। अब मैं भी रोज दौड़ने जाऊँगा, बड़ा होकर मुझे भी देश की सेवा करनी है और आपको पता है, सैनिक की माँ की बड़ी इज्जत होती है, इस गाँव में इसलिये मैं भी बड़ा होकर एक वीर सैनिक बनूँगा। माँ के जवाब की प्रतिक्षा के बगैर वरूण शौचालय में घुस गया उसका पेट जोर से मरोड़े खा रहा था।

वरूण की मम्मी कुछ न बोली पर वो समझ गई कि संगत का असर बड़ी जल्दी ही अपना रंग दिखा गया है।

तोड़ना या खोलना

राजू ने खिलौने को हाथ लगाया ही था कि अजय नाराज हो जोर से चिल्ला पड़े खबरदार जो तूने इस खिलौने को हाथ लगाया तो हाथ तोड़कर गले में लटका दूँगा, तेरे कबाड़ी स्याला... तेरे तोड़ने के लिए नहीं लाता मैं इतने महँगे-महँगे खिलौने। हम बच्चा समझकर खेलने देते है, तो यह कबाड़ी सर पर ही चढ़ा जा रहा है। चल निकल हमारे घर से, उन्होंने गुस्से में बोलते हुए उसे बाहर की तरफ धकेल दिया और स्वयं अपने कार्यालय चल दिए।

चलते-चलते मुझे भी हिदायत देते गए कि ध्यान रखना ज़रा कहीं निगाह बचाकर यह भी तोड़ न दे वो...

इनकी गाड़ी रवाना होने तक राजू वहाँ दीवार के सहारे बुत बना खड़ा रहा, फिर जब गाड़ी आँखों से ओझल हो गई तो दौड़ता हुआ मेरे पास आया और बोला ऑन्टी आप समझाईये न अंकल को... वो समझते ही नहीं है और मुझे बेमतलब के डाँटते रहते है। उनको समझ ही नहीं आता कितनी बार समझाया मैंने, तोड़ना अलग होता है। खोलना अलग, मैंने उस खिलौने को खोला था, यह देखने के लिये कि वो कैसे काम करता है। उसको, तोड़ना थोड़े ही कहते है। आपको पता है मैंने उसको देखकर बिल्कुल वैसा ही दूसरा खिलौना बना भी लिया। आपके खिलौने को जोड़ रहा था कि अंकल ने देख लिया और दो थप्पड़ मारे और खिलौना मुझसे छीन लिया, पूरा जोड़ने भी नहीं दिया। मैंने बहुत बार बोला मुझे जोड़ने दो मैं पूरा जोड़ दूँगा, पीछे-पीछे गया भी उनके, पर वो मुझे धमकाते रहे, मेरी बात भी नहीं सुनी। अधूरे खिलौने को वहाँ ऊपर दुछत्ती पर डाल दिया और पता है उसके पेंच भी रास्ते में गिरा दिये। मैं पीछे-पीछे आ रहा था, तो दो पेंच मुझे दिख

गए, तो मैंने उठा लिए... वह धारा प्रवाह बोले जा रहा था निडरता से उसने झुककर पेंच उठाने की एक्टिंग की तो मुझे उसकी मासूमियत पर हँसी आ गई।

मेरे चेहरे की मुस्कान उसके लिए प्रेरणास्त्रोत का कार्य कर गई। वह भी मुस्कुराते हुआ बोला, आन्टी आप मुझ पर विश्वास करते हो न? इसीलिए तो मैं आपको सब सच-सच बता रहा हूँ। नहीं तो अंकल पर इतना गुस्सा आ रहा था, कि मैं कभी नहीं बताऊँगा कि उस वाले खिलौने के दो पेंच मेरे पास है। न जाने कितने और उन्होंने रास्ते में गिरा दिये होंगे। उनको खुद को भी नहीं पता तो जोड़ेगे कैसे? आप ही देख लो वो वाला खिलौना अभी तक भी वहीं वैसा का वैसा पड़ा है। मुझे थोड़ी देर काम करने देते तो मैं उसी वक्त जोड़ देता। इतना प्यारा खिलौना देखों अंकल की वजह से यों अटाले में पड़ा है। राजू ने गर्व के साथ कहा।

उसके इस रौबिले अन्दाज को देखकर मुझे पुनः हँसी आ गई। इतने छोटे से बच्चे में इतना गजब का आत्म विश्वास, मेरा रोम-रोम पुलकित सा हो गया। फिर भी मैंने उसकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से पूछा, तुम जोड़

सकते हो उसे? जैसा वह पहले था वैसे का वैसा ही। हाँ-हाँ ऑन्टी, आधा घण्टे में जोड़ दूँगा। पर आप अंकल को समझा देना मुझे थप्पड़ नहीं मारे। वो बहुत जोर से मारते है। दो दिन तक मेरे गालों पर निशान लाल-लाल लगे हुए थे। वो गालों को सहलाते हुए बोला।

हाँ बेटा तुम सही कह रहे हो। पर अंकल, मुम्बई से वह खिलौना लाए थे। बहुत महँगा था वो, इसलिए उन्हें गुस्सा आ गया होगा तुम पर। अब देखों न वह नया का नया खिलौना वहाँ धूल खा रहा है। कितने मन से लाये थे वे छोटू के लिए। छोटू ठीक से दो दिन भी नहीं खेल पाया, तो अंकल को गुस्सा आना ही था।

अरें ऑन्टी गुस्सा करने से क्या होता है। थोड़ा दिमाग लगाते तो काम बनता न। देखों मैंने दिमाग लगाया तो बिना पैसे के बिल्कुल वैसा का वैसा खिलौना मैंने बना भी लिया। अंकल तो खाली पैसा कमाने में ही अपना दिमाग लगाते है। उस बन्दर (खिलौना) को जोड़ने में लगाते तो वो भी जुड़ जाता और छोटू भी उससे मजे से खेलता। आपको सबूत दिखाऊ?

ठीक है दिखाओं, मेरी स्वीकारोक्ति मिलते ही वह सरपट दौड़ गया अपने घर। थोड़ी देर में ही वापस उछलता हुआ खिलौना साथ ले लौट आया मेरे पास... अरे वाह, यह तो हू-ब-हू बिल्कुल वैसा ही है। हाँ ऑन्टी, आगे भी देखिए मेरा कमाल... कहते! हुए उसने फर्श साफ किया बन्दर को रखने की जगह बनाई। फिर अपने छोटे-छोटे हाथों से उसमें चाबी घुमाई और बन्दर को फर्श पर आहिस्ता-आहिस्ता रख दिया।... अरे वाह, बन्दर जोर से उछला, एक बार हाथ में लगी डफली बजाई फिर दुबारा से उछला, फिर तीन बार डफली बजायी और तीन गुलाटिया मारी उसके बाद बन्दर हाथों से डफली बजाते-बजाते उछलता-उछलता दूर दिवार तक चला गया, वहाँ फिर से तीन गुलाटी मारी फिर एक गुलाटी मारी, डफली बजाई और रूक गया।

राजू भी साथ में ताली बजाते-बजाते उछलते हुए खिलखिलाने लगा। उसकी निश्च्छल हँसी व मासूमियत देख मेरा भी रोम-रोम पुल्कित हो गया, उसे बाहों में जकड़ चूमते हुए कहा शाबाश बेटा तुम बहुत होशियार हो।

वास्तव में उसके द्वारा बनाया बन्दर हू-ब-हू वैसा ही था और वैसी ही कलाबाजियाँ कर रहा था, जैसा हमारे वाला खिलौना था। मैंने तुरन्त ही उससे पूछा कैसे बनाया तुमने? मैं तो आश्चर्य चकित हो उसे देखती ही रह गई। रसोई में गैस पर चढ़ा दूध का भगोना भूल ही गई। दूध बहता हुआ बरामदें में आ गया, तब ध्यान गया वहाँ।

राजू ने झट से मेरा हाथ पकड़ पुनः बरामदें में खींच लिया और बोला दूध तो उफन चुका, गैस मैंने ऑफ कर दिया है। आप सफाई बाद में करते रहना। पहले देख लो मैंने कैसे बनाया है। नहीं तो अंकल वापस घर आ गये तो बन्दर फिर से अधूरा ही छूट जायेगा। मुझे तिपाई पर बैठाते हुए बोला अब बताऊ? कैसे बनाया...

हाँ बेटा बताओं... देखों आन्टी सबसे पहले तो मैंने आपके वाला बन्दर ध्यान से देखा। चाबी लगाकर देखा और सबकुछ लिखता गया। फिर मैंने स्क्रू से उसके पेंच खोले। अन्दर से देखा और समझा कि कैसे उसमें स्प्रींग काम करती है। जब मैं सब समझ गया तो वहाँ से हमारे स्टोर में गया, वहाँ से सामान ढूंढा, फिर वो सुबह-सुबह वो कबाड़ी अंकल आते है, कबाड़ा सामान, टूटा फूटा

सामान जो खरीदते है। उनके ठेले पर ढूंढा, वो हमारे घर पर अखबार की रद्दी तोल रहे थे। हिसाब पूरा करते-करते वो मम्मी से लेन देन पर जिरह करते रहे और मैंने तब तक उस ठेले पर से बन्दर का सिर टूटा पड़ा था उठा लिया। एक गिर्री भी उठा ली, थोडी स्प्रींग भी मिल गई।

फिर अंकल से पूछा ले लूँ, उन्होंने कहा ले ले। मम्मी ने डांटा टूटी स्प्रींग हाथ में लग जायेगी मत उठा और यह टूटा हुआ बन्दर के सिर का क्या अचार डालेगा। रख दे वहीं वापस, पर मैंने मना कर दिया। अरे मम्मी आपको नहीं पता, मैं क्या कमाल दिखाने वाला हूँ। कहकर मैंने मम्मी को भी समझा दिया। कबाड़ी अंकल बोले अरे जाने भी दो, बाल गोपाल है। पता नहीं कब ईश्वर इनके रूप में अपना रूप दिखा जाये। टूटा सिर है। मेरे किसी काम का नहीं, खेलने दो बच्चे को... उनका हिसाब पूरा हुआ, तो वो आगे चले गये। मम्मी अपने रसोई के काम में लग गई और मैं वहाँ बरामदें में बैठकर चुपचाप अकेले में यह खिलौना बनाने लगा। मेरा खिलौना बन गया, पूरा

दिन लग गया। फिर आपका वाला वापस जोड़ रहा था कि इतने में अंकल की नजर पड़ गई।

बेमतलब ही मेरी पिटाई हो गई और आपका वाला खिलौना अधूरा ही रह गया। यह सब अंकल की ही गलती है। मेरी कोई गलती नहीं है, उसने सफाई पेश करते हुए कहा। राजू ने तो मुझे बिल्कुल निःशब्द ही कर दिया था। मात्र ८-९ साल का बच्चा इतनी फुर्ती से सब कुछ साफ-साफ बता रहा था। सबूत के तौर पर उसके द्वारा बनाया बन्दर उछल-उछल कर उसकी सफाई पेश कर रहा था। मैं असमंजस्य में थी, कि पति की आज्ञा का पालन करूँ? या इस तेजस्वी ऊर्जावान बालक की हौंसला अफजाई करूं?... बालक राजू तो जैसे मेरे दिलो दिमाग पर छाया हुआ था। अजय तो शाम को लौटेंगे। खिलौना पुनः जुड़ गया तो बन्दर की कलाबाजिया देखकर उनका गुस्सा भी रफूचक्कर हो जायेगा। छोटू भी अपने खिलौने की उछल-कूद देखकर कितना खुश होगा और राजू के आत्मविश्वास में भी थोड़ा सा और सकारात्मक परिवर्तन आ जायेगा, यह सोच मैंने उसे दुछत्ती पर से टूटे हुए, अरे नहीं-नहीं खुले हुए बन्दर को उठाकर लाने और उसे जोड़ने की सहमति दे दी।

कुछ ही देर में उसने इधर-उधर से जुगाड़ बैठाकर उछलता, कूदता बन्दर तैयार कर दिया और अपनी उपलब्धि पर खुद ने ही खूब तालिया बजाई। मेरे हाथ भी कब उसके सुर में सुर मिलाते हुए ताली बजाने लगे पता ही नहीं चला, एक सहज खुशी जो जीवन में मैंने पहली बार महसूस की। आँखों से खुशी के आँसू टपक पड़े।

राजू बोला आन्टी अब क्यूँ रोते हो? आपका महँगा वाला खिलौना जुड़ गया और बिल्कुल पहले जैसा ही लग रहा है। अरे बेटा यह तो खुशी के आँसू है। अच्छा...? तो आँसू भी दो प्रकार के होते है, एक खुशी के दूसरे गम के। अच्छा ऑन्टी अब मैं चलता हूँ। मेरा काम अंकल के आने से पहले ही पूरा हो गया।

पर हाँ अंकल को अच्छे से समझा देना मेरे से पंगा नहीं लेने का क्या?... और दूसरी बात यह कि खोलना अलग होता है तोड़ना अलग। खामखाँ मेरे ऊपर हाथ न उठाए। राजू ने हमारा खिलौना मेरे हाथ में पकड़ाया, अपना खिलौना उठाया और अपने घर की तरफ सरपट दौड़ गया।

शाम को अजय की गाड़ी आने की आहट पाते ही राजू पुनः दौड़ते हुए आया मेरे पास और बोला याद है न ऑन्टी, अंकल को क्या समझाना है। देखो तोड़ना अलग है, खोलना अलग। खोलने में दिमाग लगाना पड़ता है फिर जोड़ने में दिमाग के साथ-साथ जुगाड़ भी लगाना होता है। आप वो दूसरा वाला खिलौना भी मुझे खोलने देना। मैं एक और खिलौना वैसा भी बनाऊँगा। बिना पैसे में अच्छे-अच्छे खिलौने बनाकर गरीब बच्चों में बाटूँगा। मैं निरूत्तरित सी उसे देखती ही रह गई, इतना छोटा सा बालक कितनी बड़ी सोच रखता है। खुद अपने लिए खिलौना चाहने वाली उम्र में दूसरे गरीब बच्चों को खिलौने बनाकर देने की चाहत। फिर नवीन खिलौने की निर्माण तकनीक को भी स्वयं ही समझना, बगैर किसी अन्य तकनीकी जानकर की सहायता के स्वप्रेरित रूप में कार्य की तत्परता, कर्मठता, बुद्धिमत्ता भी गजब की ओह... यह तो कोई विरता ही बालक है।

अजय ने भी घर में प्रवेश करते ही उस खिलौने को देखा तो अवाक देखते ही रह गये। अरे वाह... मैंने झट से चाबी घुमाकर उसकी कलाबाजिया भी शुरू कर दी।

छोटू के साथ वे भी खुशी के मारे उछल गए। मुझसे पूछा कैसे किया?

यह राजू ने किया है मेरे सामने। ओह मैंने बड़े जोर से थप्पड़ मारे थे उसे तो। पता है वह नन्हा सा राजू खिलौने से खेलने की बजाय बगैर पैसे खिलौने बनाकर गरीब बच्चों को देने की चाहत रखता है। मैंने बताया तो वे भी भाव विभोर हो उठे और बोले इस महान बालक का हमें विशेष ध्यान रखना होगा। इसे उचित मार्गदर्शन, हौंसला अफजाई व कार्य के साथ-साथ अकादमिक शिक्षा के भी समान अवसर मिलते रहे। हम ऐसा प्रयास करेंगे और मैं कल ही बाजार से दो खिलौने और लाकर उसे दूँगा। प्रायश्चित के तौर पर। दो खिलौने हौंसला अफजाई हेतु इस तरह कल ही उसे चार खिलौने दूँगा यह मेरा अपने से वादा है। मैं राजू को बताऊँगा कि मैं अब समझ गया हूँ। तोड़ना अलग होता है जोड़ना अलग।

एक पाती पुत्र के नाम

प्रिय बेटा,

सदा प्रसन्न रहो ।

उम्मीद है तुम स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगे। बड़े दिनों से तुमसे बात करना चाह रही थी, मगर जब भी फोन किया तुम कहीं व्यस्त थे। मन थोड़ा उद्वेलित सा हो रहा था कि शान्ति काकी ने कहा बेटे को पत्र क्यों नहीं लिख देती, अरे काकी ऍड्राइड फोन के जमाने में...? हाँ

तो क्या हुआ पत्र की अपनी ताकत होती है, तुम लिखो तो सही देखना कितना हल्कापन लगता है। मन का सारा बोझ उतर जायेगा और बस मैं लिखने बैठ गई।

तुम पढ़ो न पढ़ो... कोई तो पढ़ेगा, हो सकता है तुम्हें भी मेरा पत्र कभी न कभी मिल ही जाऐ और तुम पढ़ ही लो मेरे जजबात। मैं जानती हूँ तुम्हें देहरादून बोर्डिंग स्कूल में जाना था और वहाँ तुम्हारा एन्ट्रेन्स क्लीयर नहीं हो पाया था। ऐसे में चार लाख डोनेशन देने पर ही तुम्हें वहाँ प्रवेश मिल सकता था, अन्यथा नहीं। चार लाख बहुत ज्यादा होते है, बेटा इतना हम देने की स्थिति में नहीं थे। फिर राजस्थान में ही नए बोर्डिग स्कूल में सहजता से प्रवेश हो गया तो हमने तुम्हारी इच्छा के खातिर वहाँ तुम्हारा दाखिला करवा दिया। फिर भी तुम नाराज हो गये।

मुझे लगता था कि मैं तुम्हें मर्यादित, संस्कारी, सुशिक्षित, अनुशासित बनाने हेतु जो भी व्यवहारिक प्रयास करती थी, तुम्हें नागवार गुजरते थे। इसलिये तुम घर छोड़ बोर्डिग स्कूल जाना चाहते थे। तुम्हारी खुशी की खातिर

अपनी इच्छाओं को तिलांजली दे हमने तुम्हारा एडमिशन बोर्डिग स्कूल में करवाया। देहरादून में प्रवेश हेतु प्राप्तांक तुम्हारे कम थे। तुमने उस तरफ ध्यान दिए बगैर हमारे चार लाख डोनेशन न दे पाने को अधिक प्रधानता दी और गुस्सा हो गए। अब जब राजस्थान के बोर्डिग स्कूल में तुम्हारा प्रवेश हो चुका है, तुम वहाँ रहने लगे हो फिर भी नाराजगी प्रदर्शित करते हो, यह ठीक तो नहीं बेटा।

समझ-समझ का फेर है बेटा, मुझे याद आ रहा है एक बार तुम पापा के साथ मुझे मेरे स्कूल से लेने आए थे, जब हम बिल्लू चाचा की शादी में हफ्तेभर की छुट्टी लेकर जा रहे थे। मेरे विद्यार्थियों के साथ मेरा व्यवहार देख कर भी तुम नाराज हो गए थे, तुमने कहा था कि अब ऐसा लगता है कि उन स्कूल वाले बच्चों की मम्मी हो, सुनकर मुझे गर्व हुआ था। अपने ममत्व पर, अपने शिक्षक होने पर कि मुझे प्रमाण पत्र मिला हो कि मैं अपने विद्यार्थियों से स्नेहिल माँ का सा व्यवहार कर पाने में समर्थ हूँ। कुछ बच्चों ने तुम्हें टॉफी भी दी थी। तुमने बुरा सा मुँह बनाकर ली। तब मुझे समझ आया कि तुमने

ईर्ष्यावश वह बात कहीं थी। तुम उस वक्त भी मुझसे नाराज हो गये थे। मैं तब चुप ही रही फिर दूसरे दिन मैंने तुम्हें समझाया था, शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य स्नेहिल व्यवहार के बारे में। उसकी अहमियत के बारे में, तब तुम मेरी बात से सहमत हुए थे। मगर पुनः मुँह फुलाकर बैठ गए कि हमारे शिक्षक तो हम विद्यार्थियों के साथ ऐसा स्नेहिल व्यवहार नहीं करते, तो फिर आप क्यों करती हो? ईर्ष्या की ज्वाला तुम्हारे भीतर धधक रही थी, जो कि तुम्हारी नाराजगी का कारण बन रही थी, बड़ी मुश्किल से तुम्हें समझाया था ।

बेटा जब हम चाहते है, सब कुछ हमारी इच्छा अनुसार हो तो हमें उसके लिए अपने सकारात्मक प्रयत्नों में भी वृद्धि करनी चाहिये। फिर भी मनचाहा न हो पाये तो सामाजिक प्राणी होने के नाते हमें थोड़ा समायोजन भी करना चाहिए। बात-बात पर नाराजगी प्रदर्शन करना हमारी प्रगति में बाधक होता है बेटा। ऐसे में हमारा बहुत सारा नुकसान हो जाता है और हमें पता भी नहीं चल पाता। समय निकलने के बाद पता लगे भी तो उस नुकसान की

भरपाई नहीं हो पाती। अब तुम बड़े हो रहे हो और घर परिवार से दूर, औपचारिक माहौल में पहुँच चुके हो।

बात-बात पर नाराजगी वाली आदत तुम्हारे जीवन में बाधा पहुंचाती है। मैं चाहती हूँ तुम्हारा जीवन निर्बाध गति से आगे बढ़े। तुम दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करो, भारतीय संस्कार एक ऐसी जीवन शैली है, जो हमें दुर्गम रास्तों से सहजता से निकल आगे बढ़ने में मददगार होती है। उम्मीद है तुम उसे अपनाये रख पाओंगे। बेटा समाज सेवा, आज्ञा पालन, संस्कृति की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमें इस पर कार्य करना ही चाहिए। नाराजगी की आदत हमारे पैरो में बेड़ियाँ डाल देती है। हम चाहकर भी आगे बढ़ नहीं पाते, बेटा मैं चाहती हूँ, जीवन में तुम बहुत आगे तक पहुँचों पर इसके लिये तुम्हें यह छोटी-छोटी बात पर नाराज होने की आदत छोड़नी होगी। तुम्हें पता है अपने पड़ौसी शर्मा जी का बेटा राहुल शादी के बाद से मुम्बई चला गया था, फिर लौटा नहीं। श्रीमती शर्मा कैन्सर पेशेन्ट है, उनसे चला फिरा नहीं जाता था, शर्मा जी

अकेले सेवा में असमर्थ हो रहे थे, आखिर उनकी भी उम्र ८० वर्ष हो चली है।

तो उन्होंने अपना बंगला व पूरी जायदाद वृद्धाश्रम के नाम लिख दी और वे दोनों पति-पत्नी भी वहीं जाकर रहने लगे, अपने हम उम्र लोगों के बीच उन्हें जीवन बिताना अच्छा लगने लगा। हम भी कभी कभार वहीं उनसे मिलने चले जाते है। कल अचानक उनका बेटा राहुल मुम्बई से लौटा, हुआ यों कि वह जिस कम्पनी में काम करता था, वह दिवालिया हो गई। सारे कर्मचारी सड़क पर आ गए। अब उसके पास कोई नौकरी है, न रहने का ठिकाना, क्योंकि उनका बंगला तो सक्सेना साहब ने खरीद लिया, अब वे रहते है उस बंगले में, वह वृद्धाश्रम गया, माता-पिता को आप-बीती बताई और रहने को बंगला चाहा, उनके पास इन्कार के सिवाय कुछ भी नहीं था, वे अपना सब कुछ वृद्धाश्रम के नाम कर चुके थे। राहुल को नाराजगी दर्शाने की आदत थी ही। सो वहाँ के केयर टेकर ने इसके नाराजगी दिखाते ही धक्के देकर बाहर कर दिया। अब वह सड़कों पर यो ही घूम रहा है बदहवास सा।

सब कुछ होते हुए भी वह अपना सब कुछ खो चुका है। अपना कहने को उसके पास कुछ भी नहीं है, उसे और उसकी बीबी को तो उनके करमों की सजा मिली मगर बेचारे उसके माता-पिता व उसका नन्हा सा पाँच साल का बेटा अकारण ही तकलीफ झेल रहे है। सभी पर दया आती है मगर करें क्या? खैर छोड़ों काश तुम्हें ऐसे दिन न देखने पड़े। तुम अपनी सुनाओं। तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है। और स्वास्थ्य कैसा है? किसी चीज की जरूरत हो तो फोन पर बता देना।

शेष शुभ।

तुम्हारी माँ

दिमाग का खेल

बड़े शौक से, बहुत सारे अरमानों के साथ आखातीज पर मैं राजू की बहू सुजाता को ब्याह कर लाई थी। सुजाता बड़ी भली, सुन्दर, पढ़ी लिखी आज्ञाकारी थी। मगर मुझे सभी परिवारजनों की शुभकामनाएँ मिलने के बाद भी मन में जो डर समाया था, उससे पीछा छुड़ाना थोड़ा मुश्किल लग रहा था। इस डर के कारण, जनवरी की कड़कड़ाती ठण्ड में भी मुझे पसीने छूट जाते थे। फिर बड़ी मुश्किल से मैं उस डर से उबरने की कोशिश भी

करती थी। खैर... जाने दो, जो होगा सो देखा जाएगा, वैसे मेरे आगे यह नव ब्याहता क्या चीज है?

दो-चार दिन तो पारिवारिक रीति रिवाजों में ही बीत गये, फिर एक दिन पग फेरा में निकल गया। फिर वो आजकल क्या कहते है न, वो क्या कहते हाड़ीमून, चावमून ऊँ... हूँ... शायद हनीमून। अब ऐसा है मैं ठहरी पुराने जमाने की ये नये जमाने का चलन, मुझे कुछ ठीक-ठीक इसके बारे में नहीं पता। हाँ पर यह सच है कि बेटा बहू पाँच दिनों को कहीं बाहर गये थे और कल ही लौटे हैं।

पास पड़ोसी पुनः आ गये नयी बहु को देखने के लिये, सभी सुजाता की तारीफ करते नहीं अघाते थे। राजू भी खुशी से फूला नहीं समा रहा था। बहुत खुश था वो सुन्दर, सुशील, पढ़ी-लिखी बहु पाकर। एकदम खिला-खिला सा लग रहा था। वो आज बाजार से लौटते वक्त वो चार किलो गाजर खरीद लाया। मुझसे बोला माँ चूल्हा पूजन में तुम बहू से गाजर का हलवा बनवा लो न। बड़ी भाभी से तो तुमने पूए बनवाए थे, मगर मेरी इच्छा है, कि आज गाजर का हलवा मिल जाए, तो मजा आ जाए। बेटा, अपने यहाँ परम्परा तो नई बहू से गुड़ के पुए बनवाने की ही है। पर चल तू कह रहा है तो मान ही लेना पड़ेगा,

क्योंकि तुम गाजर भी खरीद लाए हो। हलुआ नहीं बना तो इतनी सारी गाजर खराब हो जाएगी, चलो बहुरानी आज गाजर का हलुआ बना के दिखाओ मैनें आदेश देते हुए सुजाता को गाजर का थैला थमाते हुए कहा! सुजाता भी तुरन्त खुश होकर थैला पकड़कर रसोई में चल दी, मैनें थोड़ी देर बाद सुजाता को आवाज देकर कहा बेटा गाजर की छीलन इस टोकरे में डाल दों मैं बकरियों के आगे डाल दूँगी। जी मांजी अभी लाई कह कर वह थोड़ी देर मे ही मुठ्ठी में जरा सी छीलन ले लाईं।

अरे यह क्या? चार किलो गाजर की इतनी सी छीलन मैं मन ही मन बुदबदाई... हे! भगवान इसे तो गाजर छीलना भी नहीं आता, ये हलुआ कैसे बना पायेगी? मैं तो अपना माथा पकड़ के बैठ गई।

थोड़ी ही देर में गाजर का हलुआ हमारे सामने आ गया, मेरे दिमाग में तो हलुआ बनाने की विधि ही गूंज रही थी, पहले ही गुस्से में मुँह किर-किरा सा हो गया। वो तो होना ही था। जब उसने गाजर को ढंग से मोटा-मोटा छीला ही नहीं तो हलुआ अच्छा कैसे बन सकता था? हम तो पहले गाजर को अच्छे से छीलते है, खूब मोटा-मोटा

छीलन उतारते है। फिर उसे कद्दूकस से किस कर दोबारा पानी से धोते हैं। तब जाकर हलुआ स्वादिष्ट बनता है।

यह लड़की तो फूहड़ निकली। खैर-अब हम कर भी क्या सकते है? पढ़े लिखे जब गँवार निकले तो अपनी किस्मत को क्या दोष दूँ। मैं तो बस यूँ ही बड़ बड़ा कर रह गई। मेरा सारा दिन बेकार गया। बहू को शगुन देने की इच्छा भी नहीं रही। मगर परम्परा के कारण एक सौ एक रू पकड़ा ही दिये उसके हाथ में और सुजाता को हिदायत दे दी अब इसे और किसी के सामने मत परोसना, वरना लोग क्या कहेगें, कैसी फूहड़ बहू लाई हो। सुजाता बगैर जवाब दिये वहाँ से अपने कमरे में चली गई।

अगले दिन अचानक बड़े भैय्या जयपुर से हमारे घर आये। उस वक्त मैं सो रही थी। उन्होनें आने की सूचना भी नहीं दी थी। मैं शाम को उठी, तो देखा रसोई से दो प्लेटों में गरमागरम हलुआ लेकर वो मेरी तरफ आ रहे थे। अरे आप... मैं अचकचा कर रह गई। वे बोले हाँ, बस कार्यालय के काम से अचानक यहाँ आना पड़ा। घर से खाना भी नहीं खाया था, भूख लग रही थी। लो तुम भी खाओ। हाँ, हाँ क्यों नहीं? पर मुझे जगा लिया होता,

मैं कुछ और बना देती। चलो अच्छा, आप बैठो, मैं साथ में गरम आलू पराठें भी बना लाती हूँ।

नहीं-नहीं मुझे तो ये ही खाना है, बड़ी तेज भूख लगी है और यह मेरा फेबरेट है। यह कह कर भैया ने मुझे वहीं पकड़ कर बैठा दिया और प्लेट मेरे हाथों में थमा दी। वा..ह कितना स्वादिष्ट हलुआ है क्यों? जानती हो? मैने जो बनाया है। हाँ... मैनें खाते ही स्वाद के चटखारे लेते हुए सुजाता को आवाज दी। देख इसे कहते है, गाजर का हलुआ। मेरे भैय्या से ही सीख हमारे घर कितना स्वादिष्ट हलुआ बनता है।

सुजाता मेरे सामने सिर झुकाए खड़ी रही मैनें उसकी बोलती बन्द कर दी थी। भैया को अच्छा न लगा वे बोले तुम सुजाता से ऐसे कैसे बात कर रही हो? अरे भाई तुम्हें नहीं पता इसने भी कल हलुआ बनाया था। इतना किरकिरा कि खाया ही नहीं गया। सुजाता कि आँखे पानी से भर उठी थी, पर वो चुपचाप खड़ी रही। बोली कुछ नहीं। भैया ने उसे रसोई में चाय बनाने को भेज दिया। मुझे बड़ा बुरा लगा। मगर कुछ कह न सकी। फिर एक सांस में कल का वाक्या कह सुनाया। मेरी तो किस्मत ही फूट गई। ऐसी फूहड़ बहू मिली हैं। अरे बहनजी किस्मत

से ऐसी अच्छी बहू मिलती है। उसे कोसो मत। तुमने अपनी दादी-नानी से पारम्परिक तरीके सीखे हैं और सुजाता ने नवीन वैज्ञानिक पुस्तकों से। आप अपनी जगह, बिल्कुल ठीक हो और वह भी ठीक है। उसने गाजर की छीलन बहुत थोड़ी सी निकाली इसमें परेशान होने जैसे कोई बात नहीं। जानती हो गाजर की मोटी परत छीलने से फलों की उपरी परत में पाया जाने वाले विटामिन (जरूरी ताकत देने वाले पदार्थ/पोषक तत्व) खत्म हो जाता है। हल्की छीलन से पोषक तत्वों की बचत हो जाती है। दूसरी बात यह कि यदि गाजर को पहले ही खूब अच्छी तरह पानी से धोकर साफ कर लें तो इसकी जरूरत भी नहीं रहती। हाँ कहीं मिटट्री बीच में फंसी हुई सी दिखाई दे तो उसे काटा जा सकता है और जो तुम गाजर कद्दूकस कर फिर से पानी में डुबोती हो, साफ करने के लिए। सही है। तुमने अपनी मम्मी को यही करते देखा और सीखा।

मगर जब विज्ञान ने इस बारे में खोजबीन की, तो पता चला कि फल या सब्जी को काटकर या फिर कसकर पानी में डुबोते है, धोने के लिये। तब उस फल/सब्जी में जो पानी में घुलने वाले विटामिन होते हैं पानी में घुल जाते हैं, पानी में मिल जाते हैं, उस गन्दे पानी को हम फैंक देते

हैं, तो फिर वो विटामिन भी साथ में फैंक दिये जाते हैं। सुजाता ने ऐसा भी नहीं किया। इससे पता चलता है, उसने वो विटामीन भी बचा लिए जो हम फैंक देते हैं। फिर उसने गाजर को कुकर में पकाया। आप जब कढ़ाई में पकाते है, तो उसमें समय भी अधिक लगता है। ईंधन भी अधिक लगता है और आवश्यक फायदा देने वाले तत्व भी भाप के साथ मिलकर हवा में उड़ जाते हैं।

हमारी सुजाता ने अपनी पढ़ाई का अच्छा उपयोग अपनी रसोई पकाने में किया और देखो उसने, ईंधन, विटामीन (ताकत देने वाले और बीमारी से बचाने वाले पदार्थ/तत्व) समय और मेहनत सभी की बचत की। वो अब तुम्हारे परिवार का ही हिस्सा है। इस तरह से तुम्हारे परिवार को इतनी सारी बचत हुई। इससे लाभ तो अपने परिवार को हुआ न। आपकी सभी बात एकदम ठीक है पर वो हलवा जो किरकिरा बना उसका क्या? मैने भी अब अपना जोर आजमाया, बहुत देर से उनकी बातें सुन जो रही थी। भैय्या मेरी बात सुनकर हँस दिये और बोले, हाँ यह बात तो छूट गई। देखो जो हलुआ सुजाता ने बनाया था, वो किरकिरा था और जो मैनें बनाया है, वो बहुत

स्वादिष्ट है। हाँ भैय्या यह तो बहुत स्वादिष्ट बना है। कल वाला तो खाया ही नहीं गया। मैनें बताया।

मेरी प्यारी बहनजी मजेदार बात यह है कि मैनें हलुआ बनाया ही नहीं, जो तुमने अभी खाया है, यह वही हलुआ है जो कल सुजाता ने बनाया था। बच गया तो फ्रिज में रख दिया, मैं तो उसी को गरम करके लाया हूँ। है न कमाल की बात?

तुमको जो किरकिराहट कल लग रही थी, वो सिर्फ इसलिए कि तुमने देखा कि सुजाता ने बनाने का तरीका सही नहीं किया है। तुम्हारे दिमाग में वो बात ही घूम रही थीं यह सब हमारे दिमाग का खेल है। आया समझ में? हाँ भैया आपने तो मेरी आँखे खोल दी। वास्तव में सुजाता ने अपनी पढ़ाई का हमारे परिवार को बहुत सारा लाभ दिया है। यह तो बहुत अच्छी है। मेरी आँखों से पश्चाताप् के आँसू बहने लगे। फिर मैनें अपने पूरे मन से सुजाता को गले लगाया।

सफाई हम क्यों करे

रजत बड़ा खुश था। घर में इतने सारे बच्चे उसने आज पहली बार देखे थे। सब के साथ मिलकर खूब मस्ती करना, साथ-साथ खाना-खाना, सोना, नहाने के लिए बाथरूम के बाहर खड़े होकर कतार लगाना। बीच-बीच में एक दूसरे पर टीका-टीप्पणी करना और जोर से ठकाके लगाना, हँसते-हँसते दोहरे हो जाना। उसे बहुत अच्छा लग

रहा था। उसने मम्मी से सुना तो था इस बारे में, मगर स्वयं कभी अनुभव नहीं किया था। वह उछल-उछल कर इस बारे में पापा को बता रहा था। रूचि को बड़ा आश्चर्य हुआ यह सुन कर तो उसने पूछ ही लिया क्यों क्या तुम लोग अपना बर्थडे वगैरह भी नहीं मनाते। मनाते है न, रजत ने बताया, तो फिर इतने सारे दोस्तों को नहीं बुलाते? अरे बाबा दोस्तों को इन्वाइट करते हैं।

रेस्टोरेन्ट में शानदार पार्टी करते है। बर्थडे पार्टी कोई घर में थोड़े ही होती है। तुम्हारी कॉलोनी में भी और बच्चे नहीं है? अपूर्वा बोली! है, न।

तो क्या तुम उनसे कुट्टी हो। अरे कुट्टी यहाँ कैसे बीच में आ गई? हम लोग वीक एण्ड पर शाम को अपने पार्क में मिलते है। तुम्हारे दोस्त घर पर नहीं आते? चुन्नु ने प्रश्न दागा। नहीं हमारे पास फालतू टाइम नहीं होता। हम एक दूसरे के घर में ऐसे मस्ती करने कभी नहीं जाते। अच्छा... हम तो जब मरजी हो तब यूँ ही किसी के भी घर पहुँच जाते है और खूब मस्ती करते हैं। इतने में ही नीरू मौसी आ गई। पॉपकार्न, वेफर्स, केले, चॉकलेट्स समोसे लाई थी वो। थोड़ी ही देर में सब एक दूसरे से

झपट्टा मारकर, छीनकर, जोर-जोर से चिल्लाते हुए एक दूसरे पर टूट पड़े। थोड़ी ही देर में सब कुछ खत्म हो गया। यहाँ टेबिल मेनर्स के बारे में तो किसी को कुछ पता ही नहीं, पर मजा खूब आ रहा है।

अरे वो गोलू को देखो कैसे अपनी जगह पर खड़े-खड़े यूँ ही स्प्रिंग जैसे उछलने लगा, उसके देखा-देखी नीतू, पम्मी, टुन्नू, सौरभ, रिया सब उछलने लगे। फर्श पर खड़े है किसी को भी गिरने का, चोट लगने का कोई डर नहीं। मौसी, मामी, नानी सब अपने कामों में व्यस्त है। कोई किसी पर ध्यान नहीं दे रहा। सब मजे ले रहे है। इतने में सोनू के चीखने की आवाज आई। वो फर्श पर फिसल गई थी। उसका रोना सुनकर रानू मौसी दौड़ी आई। सोनू को उठाया, पानी पिलाया और सहलाते हुए पलंग पर लिटा दिया, फिर बोली इतना-कितना कचरा फैलाया है, शैतानों? चलो सब साफ करो। शरम भी नहीं आती। जहाँ खाया, वहीं फैलाया और वहीं गंदगी में खेल रहे हो। अभी तो सोनू ही फिसली है, किसी और का नम्बर लगे, उससे पहले चलो फटाफट सारा कचरा साफ कर दो।

सभी बच्चे हो हल्ला करते हुए कचरा उठाने में जुट गये। वाकई कचरा काफी फैल गया था। रजत सभी को देख रहा था। मगर उसने सफाई पर ध्यान नहीं दिया।

मौसी ने टोका, तो बोला... क्या आपके घर सर्वेन्ट नहीं है? बेटा सर्वेन्ट सफाई करके जा चुकी है। अब तो तुम्हें ही सफाई करनी होगी। रजत ने बुरा सा मुहँ बनाते हुए सफाई से इंकार कर दिया। यह मेरा काम नहीं है। अरे बेटा काम तो काम होता है। मेरा/तुम्हारा नहीं होता।

मौसी की समझाईश का रजत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वो टस से मस न हुआ। मौसी रसोई में गई और वहाँ से एक रोटी उठा लाई। बाहर एक कुत्ता भी खड़ा था। उन्होनें वो रोटी उसे दे दी। वहीं रजत भी खड़ा-खड़ा नजारे देख रहा था।

कुत्ते ने रोटी मुँह में पकड़ी फिर पूँछ हिला कर धरती को साफ किया और वहीं बैठ कर रोटी खाने लगा। मौसी बोली, देखा... क्या? आ? रजत ने गुस्से में शब्द चबाते हुए से जबाब दिया। यहीं कि मैंने कुत्ते को रोटी दी तो उसने पहले अपनी पूँछ से फर्श को साफ किया फिर उसके बाद वहाँ बैठकर रोटी खाई। हाँ... देखा। तुम्हें पता

है कुत्ता जब भी बैठता है, पहले अपनी पूँछ हिलाकर फर्श को साफ करता है फिर उस साफ स्थान पर बैठता है। हाँ वो ऐसा करता तो है।

मौसी बोली, बेटा यह तो जानवर है, इसके पास तो हमारे जैसा दिमाग भी नहीं फिर भी, बैठने से पहले सफाई करके बैठता है और तुम लोग इन्सान हो। अच्छा खासा दिमाग भी है। फिर भी यूँ कचरे में बैठ जाते हो। क्या तुमको भी सफाई नहीं करनी चाहिए बैठने से पहले? सफाई का महत्व क्या तुम नहीं जानते? अरे मौसी हम तो खड़े हैं। बैठे तो नहीं?

बैठोगे तो क्या साफ करके बैठते हो? नहीं हमारे घर में सफाई सर्वेन्ट करती है। यह हमारा काम नहीं। सर्वेन्ट न आए तो? तो मम्मी करे हाँ-हाँ मम्मी तो तुम्हारी स्थाई सर्वेन्ट है हीं।

मौसी मेरी मम्मी को सर्वेन्ट क्यों बोलती हो? रजत गुस्से में पैर पटकते हुए बोला। अरे मैं तो खाली तुम्हारी इच्छा ही बोली। तुम तो मौसी बोलते-बोलते रूक गई। बड़े ढीट बच्चे है, समझेंगे नहीं। रजत ने देखा मौसी बड़बड़ाती हुई वहाँ से चली गई। अब उसकी नजर फर्श पर पड़ी तो

उसने पाया कि और दूसरे बच्चों ने भी काफी कचरा साफ कर दिया था। वो वहीं बैठने लगा तो उसके कानों में भी मौसी के शब्द गूंजें। कुत्ता भी अपनी जगह साफ करके बैठता है। सफाई का महत्व समझता है। तो हम क्यों नहीं? पर हमारे पास तो पूंछ नहीं है, हम कैसे करें? अरे बुद्धू झाड़ू उठा के कर ले, अरे हाँ मैं कर सकता हूँ। मुझे करना ही चाहिये ऐसा। लगा मानो रजत मन ही मन अपने आपको समझा रहा है। अगले ही पल उसके हाथ में झाड़ू थी और वो कमरा साफ करने लग गया।

मिट्टी की ताकत

लता ने आटा चलनी से मिट्टी को छाना एकदम महीन काली मिट्टी अलग छन गई। शेष को उसने वहीं अहाते में, जहाँ से मिट्टी उठाई थी बिखेर दी। फिर नल के नीचे उस चलनी को बहते पानी में धोया, साफ पौंछा झाड़ा और जब वह संतुष्ट हो गई कि अब इसमें और मिट्टी नहीं, तब उसे रसोई में जाकर रख दिया। फिर इस मिट्टी को पानी डाल कर गूंथा। जैसे हलवाई मैदा और मावे को दोनों हाथों से मसलते हुए गूंथते हैं, फिर चिकना

होने पर गुलाब जामुन बनाते हैं। ठीक वैसे ही लता ने भी अपनी मिट्टी को चिकना व कोमल बनाया।

इसके बाद छोटे-छोटे हाथों से गणेश जी की आकृति बनाई चूना, सिंदूर, कोयला, हल्दी, नील जैसे प्रकृतिक रंगों से श्रृंगार कर बड़ी ही आकर्षक मूर्ति तैयार हो गई। जिसने भी उसे देखा सभी ने लता की प्रशंसा करते हुए गणेश जी महाराज को सादर नमस्कार किया।

क्षिप्रा की दादी ने उसे इशारे से अपने बगीचे में बुलवाया ताकि वे भी मनमोहक गणेश जी के दर्शन कर सके। इतनी आकर्षक मूर्ति देख दादी जी तो बस निहाल ही हो गई, वो तो हाथ जोड़ भजन गाने लगी। दादाजी मंदिर से चौकी, घण्टी, दीपक, अगरबत्ती स्टैण्ड ले आऐ और बोले, बेटा आओ आज इन गणेशजी महाराज को यहीं बगीचे में स्थापित करते हैं। ऐसा लग रहा है, मानो साक्षात गणेश जी महाराज हमारे घर पधारे हैं। सभी का सहयोग पाकर लता खुशी के मारे फूली न समा रही थी। उसे समझ ही नहीं आ रहा था क्या हो रहा है। मगर अपने आप सारे कार्य हो गए। उसकी मम्मी बेसन के

लड्डू बना लाई। पापा बाजार से फूल, माला, अगरबत्ती, खरीद लाए। पड़ौस वाली शर्मा ऑटी अपनी रंग बिरंगी सुन्दर-सुन्दर साड़ीयाँ ले आई, फिर सभी बच्चों की सहायता से उन्होनें बड़ा सुन्दर सा मण्डप तैयार कर लिया। देखते ही देखते पल भर में बगीचे का वह छोटा सा कोना मंदिर रूप में तब्दील हो गया।

वहाँ सभी अड़ौसी-पड़ौसी स्वेच्छा से जुटे थे। गोविंद अंकल आदर्श नगर वाले मंदिर के पुजारी जी को बुला लाए। वर्मा ऑटी हरी-हरी दूब ले आई। क्षिप्रा की दादी देशी घी का डिब्बा, फूल बत्ती व बड़ा वाला दीपक ले आई। क्षिप्रा बोली इतना सारा घी क्यों ले आई? तो दादी जी बोली अरे बेटा, गणेश जी विराजित होंगे तो पूरे दस दिन तक दोनों समय आरती होगी इसमें इतना घी तो लगेगा ही। अनंत चुतर्दशी के दिन गणपति महाराज का विसर्जन करेंगे। लता चिंहुकते हुए बोली! दस दिनों तक रोज आरती के साथ भजन भी होगें न दादीजी। हाँ-हाँ बेटा रोज होंगे। मैं कल भोग के लिए लड्डू बना लाऊँगी, सीमा आँटी बोली। देखते ही देखते पंडित जी ने गणेश

स्थापना प्रारम्भ कर दी बच्चे बड़े -बूढ़े सभी स्वतः ही इक्ट्ठे हो गए।

लता ने तो कल्पना भी नहीं की थी, इतना आकर्षक दृश्य और धार्मिक वातावरण स्वतः ही बन गया था। पूजन, आरती, भजन, प्रसाद वितरण पश्चात् सभी अपने घरों को लौट रहे थे। लता को सभी ने ढेरों आर्शिवाद व शुभकामनाऐं दी। लता और क्षिप्रा दोनों ही बहुत खुश थी।

दादाजी ने सभी को आगाह कर दिया था शाम सात बजे पुनः आरती होगी सभी समय पर आ जाना। अच्छा दादाजी कह कर लता व शिप्रा ने भी अपने-अपने कमरों की तरफ दौड़ लगा दी। दोपहर में खाना खाते हुए मम्मी ने पापा से कहा आज तो लता की मेहनत व श्रृद्धा ने कमाल कर दिया।

बगैर किसी योजना के किसी से कहे सुने बिना ही इतना सुन्दर कार्यक्रम हो गया, सब इकट्ठे हो गए मजा आ गया। हाँ मम्मी वास्तव में आज बहुत मजा आया। लता ने तो वैसे ही अखबार में पढ़ कर मिट्टी के गणेश जी बना लिए थे। पर यों लगा कि साक्षात भगवान ने ही धरती पर अवतरित हो सामूहिक पूजन आयोजन करवाया।

हाँ बेटा जब बच्चे निःस्वार्थ भाव से कुछ सही दिशा में करते हैं, तो ईश्वर का साथ उन्हें स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। हाँ मम्मा बिलकुल सही कह रही हो, मगर मैंने भी तो क्रिसमस पर क्रिसमस ट्री बनाया था। कितनी मेहनत की थी, जिंगल बैल्स लगाई थी।

टांफियाँ व गिफ्ट्स लगाए थे, मगर तब मुझे तो किसी का भी साथ नहीं मिला। खुद ही सारा दिन लगी रही रात को थक कर सो गई। कोई भी सांताक्रुज बन कर नहीं आया। क्षिप्रा बोलते-बोलते रूआंसी सी हो गई। उसकी मम्मी को भी उस पर दया सी आई क्योंकि वास्तव में क्रिसमस पर ऐसा ही हुआ था। बेटा रात गई, बात गई। भूला दो उस बात को, आज की खुशी पर उसको हावी मत होने दो। उस वक्त तुमने भी निःस्वार्थ भाव से किया था, यह सच है। मगर वह क्रिया हम हिन्दुओं के लिये प्रासंगिक या पारम्परिक नहीं थी, तो हमारा ध्यान उस दिशा में गया ही नहीं, फिर दादी जी, दादाजी किसी को भी क्रिसमस आयोजन/उत्सव मनाने की ठीक-ठीक जानकारी नहीं है, सो वे जानकारी के अभाव में तुमसे जुड़ नहीं पाये। आज लता के गणपति गणेश चौथ के अवसर

पर देखते ही सभी के भीतर आत्मिक रूप से भक्ति भाव पैदा हो गया, क्योंकि गणपति स्थापना पूजन हमारी भारतीय परम्पराओं में शामिल है।

सभी को जानकारी है। वो बस यही कारण रहा कि सभी एक के बाद एक जुड़ते गए। क्योंकि सभी की सोच एक ही दिशा में कार्य कर रही थी। क्रिसमस ईसाइयों का प्रमुख त्यौंहार है। वे इसे पारम्परिक रूप में मनाते हैं। केक काटते हैं। केक में अण्डा डलता है, तो बेटा दादीजी, दादाजी से उसे प्रसाद रूप में देख पाने अपेक्षा करना सही नहीं, क्योंकि वह हमारे लिए मांसाहार की श्रेणी में आता है। बस इतनी सी बात के लिए तुम रूआंसी हो गई।

चलो अब छोड़ो भी पुरानी बातों को, अभी तो गणपति उत्सव मनाओ दस दिनों तक। लता ने अकेले गणेशजी की मूर्ति बनाई है यह सच है। मगर हम सभी ने उन्हें स्वीकार किया है, तो गणेश जी हम सभी के हो गए है और हम सभी का गणपति उत्सव हो गया है और लता को अपने परिवार के साथ सभी पड़ौसियों का साथ भी मिल गया। जो कि पारम्परिक होने से सामाजिक स्वरूप में आ गया। तुम्हें भी अच्छा लगा न यह सब? आज हम

सभी, अपने पड़ौसियों के साथ खुश हैं। बेटा हमारी भारतीय परम्पराओं की यही तो विशेषता है। जिसकी ताकत आज सभी ने महसूस भी की है। हाँ मम्मा यह बात तो है। दादीजी ने भी नहले पर देहला मारा, क्षिप्रा को अपनी बाहों में भरते हुए बोली! देखा, मिट्टी के गणेश जी ने मिट्टी से जुड़े सारे रिश्तों को एकाकार कर दिया। वाह. .. हहह... सभी खिलखिला कर हँस पड़े।

लीना का गणित

लीना! जीजी आपका पेपर कैसा हुआ? देखो न मुझे तो यह प्रश्न आया ही नहीं पूरा छोड़ना पड़ा। लाली रूआंसी हो बोली मेरा भी बस सो-सो (ठीक ठाक) हुआ। हमारा पेपर तो बहुत डिफिकल्ट था। पूरी कक्षा को ही बड़ी प्रॉब्लम (कठिनाई/समस्या) हुई। कहते हुए लीना ने लाली के हाथ पेपर ले देखने का प्रयत्न किया। ओह माय गाड सेम टू सेम (एकदम समान) हमारा भी पेपर यही है। उच्च्च इतना डिफिकल्ट कैसे किया होगा तुमने? मुझे तो बड़ा दुःख हो रहा हैं, तुम तो रात दिन मेहनत करती थी, हे भगवान मेरी लाली को पासिंग मार्क्स (उर्त्तीणांक) तो कम से कम दे ही देना।

लीना अपनी यूनिफार्म की क्रीज समेटते हुए बोली अरे जीजी इतना मत डरो, इस प्रश्न को छोड़कर बाकी सभी प्रश्न हल किये हैं मैनें। मुझे ८०% के आस-पास नम्बर आ जायेगें। लाली पूरे आत्मविश्वास के साथ बोली। अच्छा तू तो बड़ी ग्रेट निकली। मुझे भी बता कैसे किए? लीना ने वहीं कुर्सी सरका ली व बैठते हुए बोली। लाली ने झठ से अपनी स्कर्ट उठाई फूंक मार कर फर्श की धूल हटाई और वहीं बैठ गई। फटाफट पेपर हाथ में लेते ही पहले प्रश्न से ही उत्तर बताने शुरू कर दिए इस प्रश्न में यह सूत्र लगेगा।

तीसरे और ग्यारहवें प्रश्न में यह सूत्र लगेगा, देखो मेरा यह उत्तर आया है। इस विधि से इसे चैक भी कर लिया उत्तर सही निकला, लाली ने खुश होते हुए कहा। उसका आत्मविश्वास चेहरे व शब्दों से प्रकट हो रहा था।

लीना की पुरानी यूनिफार्म पहने हुए भी लाली बहुत प्यारी लग रही थी। नई शानदार फ्रेस्ड यूनिफार्म पहने लीना के चेहरे पर भी वह नूर नहीं था, जो लाली के चेहरे से टपक रहा था। उसने फटाफट पूरा प्रश्न पत्र हल करके दिखा दिया बस एक प्रश्न में उसकी गाड़ी अटकी जिससे वह परेशान थी। लीना तो आश्चर्यचकित सी देखती रह गई इस सरकारी विद्यालय की बाला को। कितनी सहजता

से उसने सब प्रश्नोत्तर बता दिये जो, कि उसे तो आते ही नहीं थे। वाह लाली वाह मुझे तुझ पर गर्व है, तुझ पर और अपनी दोस्ती पर। अच्छा दिखा तो वो हिन्दी और सांईस (विज्ञान) का पेपर, अभी लाई! जीजी कह कर लाली ने अपने घर (सर्वेन्ट क्वाटर) की तरफ दौड़ लगा दी।

लीना ने भी इतने में अपनी ड्रैस चैंज कर ली। उसने भी हिन्दी व साईंस के अपने पेपर भी निकाल लिए। लाली के आते ही वो उसे अपने कमरे में ले गई, वहाँ दोनों सखियाँ इत्मीनान से पैर फैलाकर पलंग पर बैठ गई। बकायदा एक-एक प्रश्न का मिलान हुआ। इसका मतलब हमारे सभी प्रश्न पत्र समान है? सिर्फ भाषा के माध्यम का अंतर है। हमें अंग्रेजी में उत्तर लिखने होते हैं और तुम्हें हिन्दी में पर ऐसा कैसे? हमारा स्कूल तो शानदार बिल्डिंग, शानदार इन्फ्रास्टक्चर और छात्र संख्या भी लगभग २५००, इनके स्कूल की बिल्डिंग भी छोटी सी, न कोई लाईब्रेरी, खेल मैदान, छात्र संख्या भी हमारे आगे कहीं नहीं टिकती, मात्र दो सौ।

कहाँ हम ढाई हजार छात्र हमारे टीचर्स भी वैल अपटूडेट और इनके यों ही फटीचर से, नहीं बेटा अपनी गलती सुधारों। तुम्हारा वैल अप टू डेट और इनके वैल

एडयूकेटेड। तुम्हारा विद्यालय आलीशन बिजनेस फील्ड और इनका शिक्षालय/विद्यालय। वो भी सरकारी ढर्रे का।

दादाजी अपनी रौबदार आवाज में बोले वो भी लीना की परेशानी भरी आवाज सुनकर इसके कमरे में ही आ गए थे। बेटा संवैधानिक गरिमा की बात है। सभी चौदह वर्ष तक के बालकों को निःशुल्क शिक्षा, समान शिक्षा का अधिकार है। इसके तहत ही आजकल राज्य सरकारें भी अपनी-अपनी समान शिक्षा प्रणाली अपने स्तर पर निर्मित कर लेती है। तुम लोगों को आठवीं कक्षा का प्रश्न पत्र जो समान प्राप्त हुए हैं, वो प्रारम्भिक शिक्षा पूर्णता प्रमाण पत्र मूल्यांकन प्रक्रिया के तहत प्राप्त हुए है। इसके लिये राज्य सरकारी का विशेष प्रावधान अनिवार्य किया गया है। अतः निजी शिक्षण संस्थानों को भी इनका पालन अनिवार्य कर दिया गया है। यहाँ इस परीक्षा को मात्र दिव्यागों हेतु वैकल्पिक रखा गया है। शेष सभी को अनिवार्य है।

पर दादाजी हमारे स्कूल का एज्यूकेशन स्टैण्डर्ड तो बेहद शानदार है। पूरे शहर में इसका नाम हैं। अनेक शहरों में इसकी ब्रार्चेज है। हमारे सारे स्टूण्डेंट वेल टू डू स्मार्ट फेमेलीज़ से है, तो क्या हुआ बेटा समान शिक्षा का अधिकार तो समस्त बालकों को समान रूप से प्राप्त है। सभी बालकों को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं के अनुकूल

निखरने के अधिकार हमारे भारतीय संविधान द्वारा प्राप्त है। इसलिए समस्त बालकों को समान मानते, स्वीकारते हुए, शिक्षा व्यवस्था का यह प्रावधान रखा गया है। तुम्हारा स्कूल निजी या गैर सरकारी है। धनिक वर्ग द्वारा प्रारम्भ किया है। उसमें छात्र भी अच्छी आर्थिक स्थिति वाले परिवारों से आते हैं। उनसे अच्छा खासा शुल्क वसूला जाता है और उन पैसों में से ही कुछ खर्च, स्टैण्डर्ड मेटेंन करने में लगा दिया जाता है। सरकारी विद्यालय में बालक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते है। अतः आय के बगैर व्यय सम्भव नहीं हो पाता। बस यही अंतर है, तुम्हारे और लाली के विद्यालय में और हाँ लाली के विद्यालय में शैक्षिक दृष्टिकोण से समृद्ध व शैक्षिक गुणवत्ता में खरे उतरने वाले शिक्षक ही प्रवेश पाते हैं।

तुम्हारे यहाँ शिक्षकों का ऐसा कोई लिखित परीक्षण नहीं होता, सिर्फ अंग्रेजी भाषा बोलचाल में महारत होनी चाहिए। उन्हें सेवा अवसर मिल जाता है। यह अंतर तुम्हें समझ में आ भी गया होगा कि कैसे लाली सभी प्रश्नों के सही उत्तर सहजता से दे रही थी। क्यों लाली बेटा आपके विद्यालय के ही शिक्षकों की ही शिक्षा का असर है न ये? हमारे विद्यालय में बहुत अच्छी पढ़ाई होती है। जी हाँ दादाजी। लाली ने खुश होकर जवाब दिया। लीना कुछ

मायूस सी हो गई। अच्छा बेटा अब बहुत देर हो गई है। डाईनिंग टेबिल पर खाना आपका इंतजार कर रहा है। लाली बेटा आज आप भी यहाँ लीना के साथ खाना खा लो। लाली ने भरपूर नजर डाइनिंग टेबिल पर डाली, सुसज्जित टेबल, जिस पर तरह-तरह के पकवान ट्रांसपेरेंट, क्राकरी में बड़ा ही आकर्षक दृश्य दिखा रहे थे। जिसे देखने के बाद लाली ने कहा नहीं दादाजी मेरी मम्मी भी मेरा इंतजार कर रही होगी अभी तो मुझे घर जाना ही होगा। बहुत देर हो गई है। अच्छा जीजी टा टा अब मैं शाम को खेलने आऊँगी कहकर वह अपने घर को सरपट दौड़ गई।

दादाजी ने लीना को डाइनिंग टेबिल की ओर बड़े प्यार से धकेला, दादाजी मुझे भूख नहीं है। मैनें तो अपने स्कूल की हर क्लास अंटेड करी है, घर पर भी सभी कुछ दोहराया है। पर पेपर में पूछे गये प्रश्न तो अधिकतर हमें समझाए ही नहीं गये थे। वह आँखे तरेरते हुए बोली। मुझे तो बड़े होकर आई.ए.एस. बनना है। अब मैं भी लाली के विद्यालय में ही पढ़ने जाऊँगी।

ठीक है, पर वहाँ टाटपट्टी पर बैठना होता है, बच्चों को हाँ वह तो है। ठीक है, मै थोड़ा सोचती हूँ। चलो, पहले खाना खा लो फिर सोचना। नहीं-नहीं दादाजी

खाना खाने के बाद तो नींद आने लगती है। फिर कैसे सोचूर्गी? लीना दादाजी को वहीं छोड़ उछलती हुई अपने कमरे में पहुँच गई। दादाजी वहीं खड़े रह गए, लीना की फितरत समझना अब उनके बस का भी नहीं वे भी धीरे-धीरे अपने कमरे में चल दिए।

अचानक बरामदे की खिड़की से आती हवा रेशमी परदों को लहराने पर मजबूर कर गई। श्वेत रंग के रेशमी परदे सुनहरी लैस के साथ झूम रहे थे। अच्छा ही है बेटा बहु अभी घर में नहीं है। वरना तुरन्त ही बरामदे की खिड़की बंद करने का आदेश जारी हो जाता। इतना खूबसूरत दृश्य कभी कभार ही देखने को मिलता है। घर में लगे ऐ.सी (एयर कंडीशनर) ने तो इस दृश्य पर स्थायी विराम लगा रखा है। चलिए, खैर यह भी समय का तकाजा है। शाम को गार्डन में गुलाबी रंग की फ्रिल वाली फ्रॉक पहने लीना लगभग दौड़ती हुई आई, मैनें सोच लिया दादाजी, क्या बेटा? यही कि अब मुझे लाली के विद्यालय में जाना है, एक बढ़िया आईडिया आया है मुझे। अरे बिटिया रानी मात्र आइडिया आने से काम नहीं चलता, शिक्षा के लिये पूरा गणित बैठाना पड़ता है। दा...दा...जी आप भी न, माना मेरा गणित का पेपर बिगड़ा है, मगर

मेरा गणित इतना कमजोर नहीं है। अच्छे से पूरे हिसाब बैठाया है। आप बस ध्यान से सुनिए-

देखिए मेरी मंथली स्कूल फीस है ४०००/-, वेन के लगते हैं २०००/-, फिर पुअर फाउडेंशन के लिए डोनेशन देते हैं ५०००/-, तो देखिए ४०००×१२=४८०००/-, २०००×१२=२४०००। ५००० कुल मिलाकर हुआ ७७०००/- लाली के विद्यालय में फीस लगती नहीं है। पास में होने से मैं और लाली पैदल ही स्कूल पहुँच जायेगें। बच गए पूरे ७७०००/- ओ... हो... बड़ा जोरदार गणित लगाया है।

अरे यह तो कुछ भी नहीं आगे भी देखिए मेरा कमाल, डैडी बता रहे थे, कि इस बार मेरे बर्थडे पर नया प्रोजेक्ट लीना एण्टरप्राईजेज लगभग अस्सी लाख का स्टार्ट करने वाले है। है कि नहीं? हाँ-हाँ डाल तो रहे है। प्रोजेक्ट मेरे नाम से, बर्थडे भी मेरा तो उसमें थोड़ी तो मेरी भी चलेगी न? अस्सी लाख में से बस आठ लाख इतने से तर्जनी ओर अगूंठे को एक साथ मिलाकर मुँह बिचकाते हुए, लीना बोली हटा दो। कहाँ हटा दो? अरे दादाजी समझा करो न मेरा मतलब है कम कर दो और आठ लाख, सत्तर हजार में से लाली के स्कूल का फर्नीचर बनवा दों। तो मुझे टाटपट्टी पर नहीं बैठना पड़ेगा। हमारे

स्कूल के सारे बच्चे फर्नीचर पर बैठेगें, तो कितना खुश होगें सब बच्चे ढंग से पढ़ाई भी कर पायेगें।

अरे वाह हमारी गुड़िया रानी का यह आईडिया भी शानदार है और गणित भी लाजजवाब कहते हुए, उन्होनें लीना को दोनों हाथों से उठाते हुए हवा में उछाल दिया एकदम से खिलखिला पड़ी लीना। लीना की खिलखिलाहट दादाजी को भीतर तक रोमांचित कर गई। जिससे एक आइडिया उनको भी आ गया।

वो बोले बिटिया रानी जब तुम्हारे आठ लाख सत्तर हजार से फर्नीचर स्कूल में आ सकता है, तो मैं तुम्हारा दादा हूँ, मुझे तो कम से कम चार गुना नहीं तो दुगुना ही सही गणित तो बैठाना ही पड़ेगा। सत्तरा लाख चौपन हजार मेरे भी बनते हैं। इसमें से पुस्तकालय और पुस्तकें, कम्प्यूटर, खेल सामग्री भी आ जाएगी। हाँ दादाजी, चिंहुकते हुए लीना बोली आप कितने अच्छे है? पर बिलकुल बुद्धू भी क्यों?

दादाजी ने पूछें तरेरते हुए, कहा! मैं तो स्कूल फीस बचाकर और अपने नाम के प्रोजेक्ट में से बचाकर हिसाब लगा रही थी। पर आप तो कोई स्कूल भी नहीं जाते कहाँ से फीस के पैसे बचायेंगें और आपके नाम का कोई प्रोजेक्ट भी नया नहीं डल रहा। आपका गणित कैसे

बैठेगा? लीना ने मासूमियत भरे अंदाज में प्रश्न किया। दादाजी की आँखे भीग गई, उन्होनें लीना को सीने से लगाते हुए कहा चिंता न करो बिटिया रानी स्कूल फीस की तो उम्र रही नहीं।

नया प्रोजेक्ट भी नहीं है, मगर पुराने प्रोजेक्ट की कमाई तो है। बैंक में से उसके ब्याज को निकालकर मैं भी थोड़ा बहुत जोड़-तोड़ बिठा लूँगा। अब हम दादा पोती मिलकर अपना कमाल का गणित बैठाऐगें। आज गणित का पर्चा हो सकता है। हमारी बिटिया का बिगड़ गया हो। मगर गणित नहीं बिगड़ा है। हमें हमारी बिटिया रानी के गणित पर बड़ा गर्व है।

आओ इसी खुशी में आइसक्रीम खाने चलते है। लाली को भी अपने साथ ले चलेगें। बिलकुल दादाजी वो भी बस अभी आने ही वाली है।

समझदार लड्डू

वाह... लड्डू जीत गया। नहीं-नहीं मैं नहीं अतुल भैय्या जीते हैं। अतुल भी जोर-जोर से उछलने लगा खुशी के मारे अक्सर ही वह फुटबाल के जैसे उछलने लगता है, फिर उसे खिलखिलाते देख लड्डू भी दोनों हाथों से ताली पीटते-पीटते उलछने लगा। उन दोनों को उछलते देख फिरकी भी उछलने लगी, पर अभी भी वो लगातार ताली पीटते हुए बोले जा रही थी, लड्डू जीत गया, लड्डू जीत गया। अतुल अपनी धुन में मैं जीत गया, मैं जीत गया चिल्लाते-चिल्लाते उछल रहा था।

हट झूठे तू थोड़े ही जीता है।... अपनी बाल सुलभ मुस्कान के साथ फिरकी बोली, लड्डू ने झठ से उसके मुँह को अपनी हथेलियों से ढक उसे चुप कराते हुए कहा! तू चुप कर ज्यादा बक-बक मत कर। अतुल भैय्या हमेशा जीतते हैं, है न भैय्या? रौब से सीना फुलाते हुए अतुल बोला हाँ ऽऽऽऽऽ आ।

जिससे फिरकी चिढ़ गई, ऊँह.. कर उसने मुँह फेर लिया। शोर सुनकर दादी माँ भी बाहर आ गई, उन्होंने भी अतुल को अपने अंक में जकड़ कर कहा... अरे वाह, मेरा लाड़ेसर जीत गया। फिरकी पुनः शिकायती अंदाज में बोली... दादी माँ लड्डू जीता है।

चल हट, दादीमाँ ने! बड़ी आई वकीलनी कह कर उसे दूर धकेल दिया और आदेशात्मक स्वर में बोली। ज्यादा वकालात झाड़ने की कोशिश मत कर। यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जा। ज्यादा पंचायत करेगी तो घर में घुसने नहीं दूँगी। फिरकी बेचारी कसमसा कर रह गई।

अतुल भैय्या दादी माँ के साथ अंदर चले गए। फिरकी और लड्डू भी बरामदे से बाहर के दरवाजे की ओर चल दिए। लड्डू अपनी मस्ती में चला जा रहा था। मानो कुछ हुआ ही नहीं और फिरकी को अतुल, लड्डू

और दादी माँ पर गुस्सा आ रहा था। उसे दादी माँ पर सबसे ज्यादा गुस्सा था। फिर लड्डू पर, उसके बाद अतुल पर मगर बेचारी मुँह फुलाऐ चलने के अलावा कुछ और न कर पाई।

आह... कितनी सुन्दर तितली, लड्डू गुलाब के फूल पर बैठी तितली की ओर देखते हुए बोला।

मुझे नहीं देखना... फिरकी मुँह फुलाए बोली। जबकि वो सारा दिन तितलियों के पीछे दौड़ती रहती है। अरे पागल देख ले कितने पास बैठी है तेरे।

मुझे नहीं देखना, और पागल किसे बोला? पागल तो तू हैं जीत के भी हार मान लेता है और हंसता रहता है और वो दादी माँ... ऐसी होती है दादी? फिरकी को गुलाब पर बैठी तितली के बजाय थोड़ी देर पहले हुई घटना दिखाई दे रही थी। लड्डू पर तो उसका कोई असर नहीं हुआ था।

मैं और पागल? जा, जा, अब मैं आठ साल का हो गया हूँ और तेरे से ज्यादा समझदार भी तेरे में तो कोई अक्कल ही नहीं है। लड्डू गुलाब के गमले के पास वाली तिपाई पर बैठते हुए बोला।

आ बैठ, तुझे भी समझाता हूँ मेरी मम्मी इस बंगले में झाड़ू-पौछा, बर्तन, कपड़े धोने का काम करती है। मैं तो वैसे ही मम्मी के साथ आ जाता हूँ। अतुल भैय्या के पास ढेर सारे सुन्दर-सुन्दर खिलौने हैं। उनके पापा आए दिन नए-नए ढेर सारे खिलौने लाते रहते हैं। अतुल भैय्या कितने अच्छे हैं। मुझे भी रोज दिखाते हैं। हम रोज साथ-साथ खेलते हैं। मुझे नए-नए खिलौनों के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है। मेरे पास तो एक भी खिलौना नहीं है, इसलिए मैं यही खेलता हूँ। पर जब भी अतुल भैय्या खेल में हार जाते हैं। तो उनको बहुत बुरा लगता है। तो उसी वक्त खेल छोड़कर सारे खिलौने समेट कर अंदर अपने कमरे में चले जाते हैं उदास होकर।

तब मैं अकेला बरामदे में बैठा रह जाता हूँ। मम्मी सारा काम खत्म करके आए, तब तक मुझे यहाँ अकेला बैठना पड़ता है।

इससे तो अच्छा है न? भैया कभी भी हारे नहीं और हमारा खेल चलता रहे। इसलिए मैं हार जाता हूँ। भैय्या खुश हो जाते हैं और खेल दुबारा शुरू हो जाता है और मुझे मम्मी के काम खत्म होने को इंतजार भी नहीं

करना पड़ता। घर के काम खत्म होने के बाद भैय्या की मम्मी कभी-कभी कुछ खाने को भी दे देती है। दादी माँ भी पूजा के बाद प्रसाद का लड्डू, भी मुझे ही खाने को देती है। बोलती है, ले रे लड्डू तू भी लड्डू ले, ले रे। प्रसाद है दोनों हाथ एक साथ मिला के आगे कर। देख प्रसाद है नीचे एक भी दाना गिरना नहीं चाहिए।

पता है, वो सबको लड्डू का टुकड़ा प्रसाद बोल कर देती है। पर मुझे हँसते-हँसते लड्डू को लड्डू बोलती है तो मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। खाने में भी वह बहुत अच्छा स्वाद का होता है। यहाँ तो मेरे मजे ही मजे हैं। तू नहीं समझेगी। पर मैं तो बहुत समझदार हूँ।

उम्मीद के पार

उम्मीद के पार भादवे में सावन सी पुरवाई लगातार बरस रही थी। रिमझिम फुहारें चारों तरफ कोयल कूक में तो कहीं मयूर की पिहु-पिहु में बदल रही थी। छप्पर से टपकते पानी में कभी छम-छम तो कभी टप-टपा-टप का संगीत बज रहा था। जो कि मेरे सर पर हथौड़े सा वज्रपात कर रहा था। सायन की बूँदी का इतना निष्ठुर आभास अपने पंद्रह वर्षीय जीवन में मुझे पहले कभी नहीं

हुआ था। यह ऋतु तो मुझे हमेशा से ही बहुत अच्छी लगती थी। ए वन चाय सेन्टर पर काम करना, लगातार फुआरों के बीच, सारा दिन चाय, कचौडी, समोसों की शानदार महक आहा.. सोच कर ही मुरझुरी सी आ रही है। अक्सर ही बारिश के मौसम में ग्राहकी काफी बढ़ जाया करती थी, सो सारा ही दिन कढ़ाई, पतीली करीब-करीब चढ़ी ही रहती थी।

खुश होकर मालिक भी मुझे अतिरिक्त पगार के साथ ही कचौड़ियों की बरसात की सौगात भी दे दिया करते थे। मैं भी खुश होकर बारिश में भीगते-भीगते उनका सारा काम निपटा दिया करता था और आज यही बारिश आँखों से बहते आसुओं की याढ़ सी प्रतीत हो रही। ऐसा लगता था, कि मानो मेघ भी मेरी तकलीफ महसूस कर लगातार सेवन कर रहे हैं। मैं बस यूँ ही अहाते में दीवार से सिर टिकाए बैठा था, दोनों घुटने सीने से चिपकाऐ, हाथों से बांधे, चेहरा ऊपर, नेत्र आसमान में और ख्वाबों में न जाने क्या-क्या। कभी-कभी विचार शून्यता सी छा जाती थी। कहीं कोई उम्मीद नहीं दिखाई देती थी।

इसके बावजूद भी कोई आहट होती तो चेहरा एक दम से खिल जाता था कभी-कभी शायद ऊपर वाले की

मेहरबानी हो जाए मुझ पर। अभी उस दिन की ही तो बात है। हाँ उस दिन रक्षाबन्धन था। कुछ संभाता परिवारों की खूबसूरत सी साड़ियाँ बाँधे कुछ महिलाऐं आई थी यहाँ। यहाँ आते ही उन्होंने वो सामने वाली दीवार पर अपना विनर लगाया था। फिर हम सभी लड़की की कलाई पर यंत्रवत बड़ी-बड़ी राखियाँ बाँधी थी। फिर बहत सारे फोटो भी हमारे साथ खिचवाऐं थे।

मैं टकटकी बाँचे एक-एक कर सभी चेहरों को बड़ी उम्मीद से देख रहा था। सभी एक से बढ़कर एक सूबसूरत मगर वो अपनापन जिसकी मुझे तलाश थी, कहीं भी दिखाई हीं दिया। उसके बावजूद भी मैंने अपनी थोड़ी हिम्मत जुटा कर दो इको आसमानी रंग की साड़ी पहने जो मेडम थी, उनसे अपनी बात कहने का प्रयास किया। मगर हिकारत भरी नजरे मुझ पर डालती तेजी से चल और सतरी से बोली जरा सम्भलकर इन बदमाशों से लगातार परे जा रहे थे। संतरी में और हमें झिडकी दी और वे सभी तिलमिलाते हुए तेजी से बाहर की ओर चल दी। थोड़ी ही देर बाद अन्य किसी समाज के और लोग इनमें महिलाओं के साथ कुछ १०-१५ पुरुष भी थे सभी ने हमारे समूह को मिठाई बांटी, बाँटते-बाँटते तक अनेक फोटो भी

खिचवायें, भाषण भी दिये। वो स्टील में कलर का मान साहब की बातों में तो इतनी मिठास थी कि ऐसा लगता था, मानो मिठाई की मिठास भी उसके आगे फीकी है।

मैंने हिम्मत जुटा कर उनसे बात करनी चाही तो वे बोले हाँ-हाँ कहो हम तराई बाटने ही तो आए है यहाँ। उनके इन वाक्यांशी मराहम्मत को थोड़ा बढ़ा दिया इसमें मैंने एक सांस में अपनी बेगुनाही उनके सामने बयां कर दी। शर्म के मारे बोलते वक्त उनसे आँखे नहीं मिला पा रहा था। नीचे आँख झुकायें ही मैंने उनसे सारी बात कह डाली। बात खत्म कर बड़ी उम्मीद से उनकी तरफ देखा तो वे बड़ी ही गौरवानभूती के साथ हाँ, हाँ ठीक है। आगे देखते है। कह कर, तेजी से मेरी आखों से ओझल हो गए। मेरी आँख डबडबा कर रह गई। काश इनकी जगह मेरी सरिता मैम होती। मेरा कहा यूँ बेकार न जाता। मैं जानता हूँ। वे भी इसी तरह की किसी समाज सेवी संस्था से जुड़ी हुई है। उनके जैसे लोग ही है। जिन्होंने इन संस्थाओं की इज्जत को बना रखा है। चाहे कम लोग ही है दिल से रक्षा करने वाले मगर है तो सही। चलो फिर कभी सही, कोई तो आएगा। मेरे बजरंग बली आज नहीं

तो कल, किसी न किसी को, मेरी सहायता को अवश्य भेजेगे। किन्तु फिर कई दिन और गुजर गए।

अब तो मेरी आस भी उगमगाने लगी कि अचानक मैंने अपने कन्धों पर किसी स्पर्श को महसूस किया। मैंने बंद आँखों से ही देखा सरिता मेंम को आँखे खोलने का साहस ही न हुआ, हे ईश्वर ये सरिता मेंम ही हो पर कहीं ऐसा न हो मेरे आँख खोलते ही यह स्वपनिल स्पर्श का एहसास छूट जाए।

मैं वो ही चुपचाप बैठा रहा। मेम ने पुनः मुझे झकझोरा कपील सुमधुर घटियों की सी आवाज ने मेरे पूरे शरीर में तरंग सी भर दी और मैं उछल कर खड़ा हो गया। सामने वास्तव में ही सरिता मेम खड़ी थी। मैंने जोर से कस कर उनके गले लिपटना चाहा और अगले ही पल में उनसे गले लगा। ऐसे पड़ा उनकी उगलियाँ मेरे बालो को सहला रही थी मैं जोर- जोर से रो रहा था, हिचकियों सी बंध गई। गले से कोई शब्द न निकले यह रूहानी स्पर्श ही शायद मेरी किस्मत में जो शायद मैं इस जेल में पहुँच गया। वर्ना तो मेरी औकात मैम के चरण स्पर्श की भी न थी। मैं रोज मेम से मिलते ही हाथ जोड़ प्रणाम करता फिर उनकी चरण धूली अपने माथे से लगाता और उसी

को अपना सौभाग्य समझता था। पर आज मुझे नहीं पता मैं कैसे उनके गले लिपट गया। उन्होंने भी मुझे अलग करने का प्रयत्न नहीं किया। इतने में संतरी जोर से दहाड़ा और मेरी तरफ भागा, छोड़ मेडम को, साले मेरे अलग होते ही मेडम ने पूनः मुझे जोर से खींच लिया और संतरी से बोली अरे इसे तो मैने लगाया है। अपने गले नहीं, नहीं मैम आप नही जानती इन हरामियों गदी सी गाली उसके मुँह पर आई और मेडम के व्यक्ति रच जाग ठहर सी गई।

मैडम ने आदेशात्मक रूप में संतरी से कहा आप जाओ। अपना कोई और काम सम्भहालो इस बच्चे को मैं सम्महाल लूगी। इससे मुझे कोई खतरा नहीं है। बचपन से पहचानती हूँ, मैं इसे मैडम ने इतनी सफाई से झूठ बोला कि मैं ठगा सा उन्हें निहारता ही रह गया और संतरी आशवस्त हो वहाँ से चला गया।

फिर मैडम, पास ही रखी कुर्सी को मेरे पास सरकाकर बैठ गई, मुझे भी वहीं बैठने का इशारा दिया और बोली अब बताओं यहाँ कैसे आए? मैंडम आप तो जानते ही हो, मैं अपनी साईकल दौड़ाते हुए सभी का काम चुटकी बजाते कर दिया करता रहा हूँ। उन्होंने स्वीकारोक्ती में सर हिलाया मैं अच्छे से जानती हूँ। आगे कहो उस दिन

रामजी हलवाई ने मुझे एक पैकेट रेल्वे स्टेशन पहुँचाने को कहा था। मैं जैसे कि हमेशा करता हूँ, तुरन्त वो पैकेट साईकल के कैरियर में दबाकर तुरंत स्टेशन पहुँच गया। वहाँ कल्लूमल नामक आदमी को देना था। ये पैकेट मगर हाँ कल्लूमल कहीं न दिखा और अचानक दो पुलिस वाले आए और मुझे दबोच लिया बोले साले धरती से तो उगा नहीं अभी से ड्रग्स का धन्धा करता है और जोर-जोर से मुझ पर इण्डे आए बरसाने लगे। मैं चीखता रहा किसी ने नहीं सुना।

मारते-मारते मुझे पुलिस स्टेशन ले आये और तरह-तरह के प्रश्न करने लगे। लगातार डण्डे की मार झेलते-झेलते मैं अधमरा सा हो गया। मैं उस पैकट के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। क्या बताता उन्हें रामजी हलवाई को भी मेरे कहने पर बुलवाया गया। मगर उसने कहा कि वो तो मुझे जानता भी नहीं। मेरी दुकान पर तो वैसे ही चार छोरे और काम करते है। मुझे कुछ भिजवाना होता तो उनसे क्यों नहीं भिजवाता। इस अन्जान छोरे को क्यों देता अपना सामान? साला हरामी की औलाद जबरदस्ती मेरा नाम लगाता है, कहकर दो चार लात घूसें उसने भी बरसा दिए मेरे शरीर पर। फिर वो भी वहाँ से

चलता बना और ये पूलिस वाले मुझे मारते पीटते यहाँ ले आए, मुझे तो अपना कसूर तक समझ नहीं आया। मैडम ये ड्रग्स होता क्या? मैं तो यह भी नहीं जानता। मेरा आपाहिज बाप बरसों से खाट पर रहा है। शाम को रोटी खिला देता हूँ, तो खा लेता है। वरना बेचारा लाचार ही भूखा प्यासा खाट पर पड़ा रहता है। मैं सुबह चार बजे उठकर पढ़ाई करता हूँ, फिर कोटरी की झाड़ू लगा एवन चाय सेन्टर की सफाई करता एक महक चीज को चमकाकर, फिर नहा धो स्कूल आ जाता है। छुट्टी के बाद सीधा एवन चाय सेन्टर, यहाँ तब तक बर्तनों का ढग लगा होता उनकी सफाई करते-करते सभी ग्राहकों की खिदमत में आ जाता, मालिक देतो खा लेता वरना बस रात को बचा-कुचा खाना लेकर जाता दोनों बाप बेटे खा लेते हैं। फिर थोड़ी देर पढ़ाई कर के सो जाता, सारा दिन दोहरी दीवाने काम करता हूँ। मालिक ने एक साइकिल दी उससे सारा काम कर देता।

रामजी हलवाई के कहने पर उसका भी काम कर देता है बदले में मिठाई खाने को मिल जाता है। इसके अलावा मेरे पास बताने को कुछ भी नहीं है। मैने कभी कोई गलत काम नहीं किया है। मैडम ने पूरे आत्म विश्वास

से मेरे सर पर हाथ रखकर कहा! मैं जानती हूँ। बस अभी कानूनी कार्यवाही पूरी करके देखते है। कितना समय लगता है। तुम्हारी बेगुनाही सिद्ध करने की, जो तोड़ कोशिश कर रही हूँ, कल तुम्हारे विद्यालय से तुम्हारे उम्र संम्बन्धित दस्तावेज ला कर पेश कर देगे। नाबालिक होने से तुम्हें माफी आसानी से मिल जाएगी, फिर तुम मेरे साथ बेटे की हैसियत से अपने घर में रहोंगे। यह कहकर मैं तेजी से आफिस की तरफ चल दी और मेरी तकलीफ पल भर में गायब हो गई। बरसात की झड़ी अब मुझे बहुत प्यारी लगने लगी थी, यो टप-टपा-टप की आवाज में नवीन संगीत की स्वर लहरियाँ सुनाई देने लगी, सरिता जी का बेटा,

दोस्ती के तराने

अरावली पर्वत श्रृंखला की एक कंदरा मे एक खरगोश सपरिवार हँसी खुशी रहता था। एक दिन की बात है, नटखट खरगोश अपनी दादी के साथ सैर पर निकला। थोड़ी दूर पर ही उसने देखा कि एक अजीब सा प्राणी रो रहा है, चिल्ला रहा है, रुको नटखट आओ हम देखते हैं, उन्हें हमारी मदद की जरुरत लगती हैं। फिर उन्होंने दोनो ने मिलकर बांगड़ कछुऐ को सीधा किया। अरे आप यहाँ कैसे?

बांगड़ कछुऐ ने बताया कि मैं ऊपर वाली पहाड़ी पे जा रहा था, पैर फिसलने से अचानक नीचे उल्टा गिरा। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ, न तो शरीर में इतनी ताकत नहीं रही, अपने आप सीधा नहीं हो पा रहा था। तकलीफ के कारण चीख निकल रही थी। आप लोगों ने मेरी मदद की, आपका बहुत-बहुत आभार।

अरे नहीं-नहीं इसमें आभार कैसा। यह तो हमारा कर्तव्य है। दादी बोली! फिर उन्होंने बताया कि यह नटखट मेरा पोता है। चलो नटखट दादाजी के चरणस्पर्श करो। ये तुम्हारे दादाजी के घनिष्ठ मित्र हैं।

घनिष्ठ मित्र... ऐसा कैसे हो सकता है। मैंने तो इन्हें कभी देखा ही नहीं। घनिष्ठ मित्र तो आपस में मेलजोल रखते हैं। हाँ बेटा, आप, सही कह रहे हो पहले हमारे बीच बहुत प्यार था। बड़ी घनिष्ठता थी। फिर हमने आदमियों को प्रतियोगिताऐं करते देखा। तो हम भी आपस में प्रतियोगिताऐं करने लगे। प्रतियोगिता में एक जीतता है और दूसरा हारता है। जिससे एक खुश और दूसरा दुःखी हो जाता था। इस हार-जीत के खेल ने हमारी मित्रता में कटुता भर दी। फिर धीरे-धीरे हमारी दोस्ती टूटती गई।

हमने एक दूसरे से बात करना, एक दूसरे की मदद करना भी बंद कर दिया। फिर मैं अपने परिवार के साथ उस तलहटी में रहने लगा और मेरा मित्र खरगोश उस कंदरा मे रहने लगा। तुम बहुत किस्मत वाले हो तुमने इतने अच्छे परिवार में जन्म लिया। तुम्हारी दादी भी बड़ी सेवाभावी हैं। इन्होंने सारा बैर भाव भुलाकर, तुम्हें मेरी सहायता करने को कहा। तुम दोनों ने मिलकर मेरी सहायता की। वरना तो मैं यहाँ यों ही उल्टा पड़ा रहता। मेरे पूरे शरीर में दर्द हो रहा है, इसलिए मैं स्वयं सीधा हो भी नहीं पाता और यों ही पडे-पड़े कहारता रहता। अपने आँसू पोछते हुए उन्होंने कहा... आओ चलो हमारे साथ आज तुम हमारे घर चलो। मेरा पोता भी तुम्हारे बराबर का ही है।

अच्छा क्या नाम है उसका? नटखट खरगोश ने पूछा कछुआ दादाजी ने बताया कि हम उसको जगमग कहते हैं। अरे वाह दादी क्या मैं जगमग कछुऐं से दोस्ती कर सकता हूँ? हाँ... हाँ बेटा क्यों नहीं, दादी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। फिर हम सब धीरे-धीरे चलते हुए अपने दादाजी के मित्र बांगड़ कछुऐं के घर गए। उन्होंने खूब खातिरदारी की।

लाल-लाल खूब सारी गाजरें दी, खाने को भी और साथ में घर ले जाने को भी। जगमग कछुऐं के साथ नटखट खरगोश ने खूब शैतानी की। हरी-हरी कोमल घांस पर खूब उलट-पलट की। वह घांस खाने में भी बहुत स्वादिष्ट थी।

चलते वक्त नटखट की दादी ने जगमग कछुऐं को कहा अब तुम दोनों पक्के दोस्त बन कर रहना और हमेशा खूब मजे करना। अब हम चलते हैं। आप लोग पूरे परिवार के साथ कल हमारे घर आना। नटखट के दादाजी भी आप लोगों को अचानक अपने मेहमान के रुप में अपने घर देखेंगे तो बहुत खुश होंगे। सारी पुरानी दुश्मनी भूल जाएंगे आखिर वे हैं तो आपके दोस्त ही हाँ... हाँ... क्यों नहीं, हम आपके घर जरूर आयेंगे। फिर धीरे-धीरे एक दूसरे के घर आने जाने से कछुआ और खरगोश के परिवारों में पुनः दोस्ती हो गई। नटखट और जगमग को एक ही स्कूल में प्रवेश करवा दिया गया। जिससे बहुत सारी समस्याओं का हल निकल गया। बरसात के दिनों में बहुत कीचड़ हो जाता था, तो नटखट खरगोश अपने मित्र जगमग कछुऐ की पीठ पर सवार हो कर समय पर स्कूल

पहुँच जाता और तेज गरमियों के दिनों में जगमग कछुए के पैर जलते थे, तो नटखट खरगोश उसे अपनी पीठ पर बैठा कर तेजी से दौड़ता हुआ स्कूल पहुँच जाता। इस तरह उनका जीवन बहुत आसान हो गया। अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में नटखट खरगोश और जगमग कछुऐं की दोस्ती के तराने गूंजने लगे।।

चोट का लाभ

घर में गाना बजाना चल रहा था। आगरा वाली ताई जी ढ़ोलक की थाप पर जोर शोर से गा रही थी। चाट पत्ता फैंक दिया रे... गलियों में आके शोर किया... बन्नी के ताऊ बड़े कमाऊ... मीनू भाभी क्या मस्त डांस कर रही थी, बड़ा मजा आ रहा था कि अचानक रसोई से पलक सुबकते हुए आई और मेहुल की गोद में चढ़ते हुए बोली मामा, मेले में चलों हमको बाहर मेला देखने जाना है। अरे... घर में इतना शानदार कार्यक्रम चल रहा है।

बड़ा मजा आ रहा है, पुरा परिवार इकट्ठा है बाहर के मेले में फिर कभी चलेंगे.. मेहुल ने कहा।

नहीं... बिलकुल नहीं, मुझे नहीं रहना घर में। मुझे तो आज ही मेले में जाना है। पलक जिद करते हुए बोली बस आप उठो, और चलो वैसे ही मेरा मूड ऑफ हो रहा है। मेले का नाम सुनते ही अन्नू, मिन्नी, गिल्लू, बिट्टू सभी के कान खड़े हो गए। घरेलू संगीत में इन बच्चों का मन लग भी नहीं रहा था। सबने मेहुल को घेर लिया बस मेला, मेला, मेला... बस अब तो चलना ही पड़ेगा। बच्चों ने मिलकर शोर मचा दिया। वैसे भी उनकी मम्मीयां दुखी थी क्योंकि ये वानर सेवा उन्हें संगीत का आनन्द नहीं लेने दे रही थी। हर थोड़ी देर में कोई ना कोई फरमाइश... किसी ना किसी मम्मी को रसोई में धकेल ही देती थी।

शोर सुनकर सभी मम्मियों ने भी मेहुल को झट से कह दिया हाँ, हाँ ले जाओ इनको, सबने मिलकर घर में तूफान मचा रखा है। सारे इक्ट्ठे हो जाते हैं तो, किसी के काबू में नहीं आते। उषा मौसी बोली... बस फिर क्या था एक पल में बच्चों की जिद व शोर सातवें आसमान पर पहुंच गया। मेहुल को सभी बच्चों को मेला लेकर जाना ही पड़ा।

मेहुल की बाई पर अन्नू, मिनी आगे व पारूल, बिट्टू पीछे बैठ गए। गिल्लू के लिए जगह नहीं बची तो वो रोने लगा और मेहुल की पैंट पकड़ गिलहरी के जैसे झट से वो उसके कंधे पर चढ़ गया। सब लोग बोलते ही रह गए। गिल्लू रूक, रूक गिल्लू गिर जाएगा। मगर उसने किसी की न सुनी। मेहुल के कंधे पर बैठने के बाद उसने अपनी शर्ट की आस्तीन से अपने आंसू पौंछे फिर बोला अब चलो मेले।

गाड़ी स्टार्ट होने से पहले ही क्षिप्रा दीदी भी कोचिंग से लौट आई। अरे रे रे... यह क्या सड़क पर सर्कस दिखाया जा रहा है। नहीं दीदी, हम तो मेला देखने जा रहे हैं। आ जाओ आप भी अपन वहां पर बड़े-बड झूलों में झूलेंगे। पारूल बाइक से उछल कर उतर गई और क्षिप्रा की एक्टिवा पर चढ़ते हुए बोली, मैं आपके साथ चलूंगी। अरे रूक तो जरा पहले इस बंदर को तो उतार लूं। गिल्लू वास्तव में बंदर सा ही लग रहा था। क्षिप्रा ने जैसे ही उसे हाथ लगाया, वो झट से बोला पहले बताओ आप भी चल रही हो न मेले में? उसने मेहूल की गरदन में अपनी बाहें कस रखी थी। हां हां चल रही हूँ, वरना तो तुम्हारी फौज मेरे मेहूल भैया का एक्सीडेंट करवा देगी। क्षिप्रा दीदी ने

कहते हुए गिल्लू को उतार अपनी एक्टिवा पर आगे खड़ा कर लिया।

फिर सब शोर मचाते हुए एक दूसरे से रेस लगाते मेले में पहुंच गए। सबसे पहले वो सबसे बड़ा वाला झूला, मिनी बोली। ठीक है कह कर मेहुल उसे झूले की टिकट विंडों की लाईन में खड़ा हो गया। पता नहीं कब नम्बर आयेगा मिनी ने शंका जाहिर की। चुप कर, लाइन में लगना जरूरी है। तुम जैसे लोग आगे बढ़ने को धक्का मुक्की करते हैं ना इसलिये तो देखो लाइन में खड़े रहने के लिए यह लोहे का जंगला लगाया गया है। मैं टिकट लेकर आऊं तब तक, उस पीपल के पेड़ के नीचे खड़े रहो चुपचाप। मेहुल गुस्से में बोला।

गिल्लू तो पूरा बंदर है, वो कहां मानने वाला था। वह फिर उस लोहे के जंगले पर लमुटता हुआ ऊपर चढ़ गया और टिकट विंडों पर पहुंचने की जुगाड़ लगाने लगा। लाईन में खड़े लोग भी, अब उसे डांटने लगे। एक जोर से चिल्लाया सम्भालो अपने बच्चे को, क्षिप्रा और पारूल तेजी से आए और उसे उतने को कहा। गिल्लू ने गुस्से में वहीं से छलांग लगा दी। पारूल ने उसे आगे बढ़ सम्भालने की कोशिश की, मगर उसे धक्का लगा फिर वह और गिल्लू दोनों ही गिर पड़े। गिल्लू तो झट से कपड़े झाड़ उठ गया।

मगर पारूल उठ न सकी। उसका पैर मुड़ गया था, बड़ी जोर से दर्द हो रहा था। क्षिप्रा ने उसे बड़ी मुश्किल से गोद में उठाया। मेहुल भी अपनी लाईन छोड़ कर पास वाली दुकान से एक कुर्सी मांग लाया। फिर पारूल को उस पर बैठाया, पानी पिलाया, बिट्टू चिल्लाया, मामा लाइन में आओ, अपन पीछे हो जायेंगे। लाइन में खड़े एक अंकल बोले अरे चिंता मत करों, आपका नंबर आने पर आपको टिकट दिलवा देंगे आप पहले बच्ची को सम्भालों।

क्षिप्रा व मेहुल ने बारी बारी से पारूल के पैर में हल्के-हल्के मालिश की। नम्बर आने पर मेहूल टिकट लेने गया तो पारूल ने उठने की कोशिश की मगर उससे उठा न गया। लगता है मोच आ गई है। चलो तुम यहीं कुर्सी पर बैठो बाकी सब झूले पर जाओ, हम दोनों यहीं बैठे हैं। पारूल ने झूले तक चला नहीं जा रहा है हमारे टिकट पीछे वाले को दे दो। पारूल फिर रूआंसी होकर बोली। मेरी तो किस्मत ही खराब है। आज पूरा दिन बेकार गया। पहले पापा ने डांटा, जाओ अब सलाद काटो इतनी बड़ी हो गई हो। आंठवी कक्षा में आ गई हो, थोड़ी घर के कामों में मदद किया करो। फिर नानी ने मूली पकड़ा दी, इसे गोल काटना धीरे-धीरे।

मैं काटने लगी तो फिर डांटा अरे साफ तो कर मूली में मिट्टी और जीवाणु लगे होते हैं। मैंने धोया तो फिर डांटा, ढंग से कर। देख ये छोटे-छोटे बारिक रेशें हैं ना यहां मिट्टी जीवाणुओं के संग चिपकी होती है।

फिर मैने आलू छीलने वाले चाकू से मूली को पूरा साफ किया। मोटा छीला तो मौसी ने डांटा अरे यह क्या? इतना मोटा-मोटा छिलका... फिर अब गिर गई तो झूला झूलने को नहीं मिला, घर जाऊंगी तो मम्मी डांटेगी पैर तुड़ा लाई? सम्भहल कर नहीं चलती...

हां वो तो है... और वह देख सामने आइसक्रीम वाला अब अपन दोनों आईसक्रीम खाएंगे। अब बोल किस्मत थोड़ी तो अच्छी है ना? हाँ दीदी कह कर पारूल मुस्कुरा दी। क्षिप्रा ने उसे आइसक्रीम पकड़ात हुए कहा घर पर इतने सारे मेहमान है, तो हमें थोड़ी मदद तो करनी ही चाहिए यह अच्छे बच्चों की निशानी है इसलिए पापा ने गलत नहीं कहा... हां दीदी, फिर नानी ने कहा, क्योंकि उन्हें पता है मूली मिट्टी में रहती है। पौधे की जड़ होती है खेतों में जीवाणु रोधी रसायनों का छिड़काव होता है तो वो रसायन यदि हमारे पेट में चले गए तो हम बीमार पड़ जायेंगे। इसलिए उसे पूरा ढंग से साफ करना जरूरी है। नानी ने सही कहा, हां दीदी पर फिर मौसी फल, सब्जी,

अनाज की उपरी परत में विटामिन 'बी' समूह होता है। मोटे-मोटे छिलके निकालने से वह खत्म हो जाता है, क्योंकि वह छिलकों के साथ हम कचरे में फैंक देते हैं तो हमें मूली को पानी में खूब अच्छे से धोना चाहिए। फिर भी कहीं रेशे के साथ मिट्टी लगी दिखाई दे तो उसे हल्के से छील दो। बाकी जीवाणु भी हमारे पेट में न जाएं और विटामिन बी भी बच जाए। हां दीदी... इसका मतलब पापा, नानी, मौसी, सभी सहीं है। और आपने मुझे भी सही कर दिया। अब मैं अच्छी बच्ची बनकर अच्छे से काम करूंगी। मेरी किस्मत बहुत अच्छी है मुझे इतनी सारी अच्छी अच्छी जानकारी मिली और आइसक्री भी मिली। दीदी आप बहुत अच्छी हो। आज का दिन बहुत अच्छा है।

और पैर की चोट? क्षिप्रा ने खिलखिलाते हुए पूछा अरे दीदी वह भी अच्छी है। उसके कारण ही तो मैं आपके पास बैठी। नहीं तो झूले में मस्ती चल रही होती। वहां आप इतनी अच्छी-अच्छी बातें थोड़ी बताती। मुझे तो इसे दो-दो फायदे मिले। एक तो मेरी पसंद की आइसक्रीम और दूसरा इतनी सारी सही जानकारी। चोट तो एक दो दिन में ठीक हो जायेगी मैं अच्छी बच्ची हमेशा के लिए बन जाऊंगी।

है ना दीदी...?

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. चेतना उपाध्याय
जन्म - 14.06.1966, अजमेर
पति - श्री अनील कुमार उपाध्याय
शिक्षा - एम.एस.सी. बाल विकास, पी.एच.डी., बी.एड.
ईमेल -chetnaupadhyay14@gmail.com
मो. - 9828186706
कार्यक्षेत्र - वरिष्ठ व्या. (समकक्ष प्रधानाचार्य) जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, मसूदा, अजमेर (राजस्थान)

प्रकाशन एवं उपलब्धियाँ :-

1. कहानी, कविताएं, आलेख, शोधालेख आदि निरंतर प्रकाशित।
2. सूक्ष्म गहनानुभूति, अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन।
3. रिक्त आकाश (कहानी संग्रह),
4. काव्य सुमन (काव्य संग्रह)
5. बालकों की अदालत (बाल कविता संग्रह)
6. मेरी थाई यात्रा (यात्रा संस्मरण)

डाक्युमेन्ट्री निर्माण - 1. अक्षरो की फसल (प्रारंभिक अक्षर ज्ञान),
2. अक्षरों की फसल (भारतीय अंक ज्ञान)
3. दसवी कक्षा पश्चात् विषय चयन पर मार्गदर्शन

एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली द्वारा बाल फिल्म हेतु राष्ट्रीय अवार्ड
अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल जयपुर मे बेस्ट डायरेक्टर अवार्ड
अंतराष्ट्रीय क्राबी महोत्सव थाइलैंड में भारत भास्कर अवार्ड
अंतराष्ट्रीय बाल साहित्य गौरव रत्न प्राप्त
अंतराष्ट्रीय सैंड ड्यून फिल्म फेस्टिवल में फिल्म प्रसारण
अंतराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोधालेख प्रकाशित
एस.आई.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों में लेखन
30 राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र वाचन, 25 राष्ट्रीय सम्मान
राज्य स्तरीय संदर्भ व्यक्ति (संस्था प्रधान) लीडरशीप राजस्थान
अंतराष्ट्रीय लायन 3233 ई 2 रीडिंग एक्शन सभापति।
अंतरा शब्द शक्ति गौरव सम्मान 2019।
अंतरा शब्दशक्ति साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान 2019
अंतराष्ट्रीय अमृतादित्य भूटान साहित्य शिखर सम्मान, भूटान
अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन वसुधैव कुटुम्बकम

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-064-3
मूल्य 150/-
शब्द सुगंध